सूरतुन नबा-७८

سُوْرَةُ النَّبَا

सूरतुन नबा* मक्का में नाज़िल हुई और इस में चालीस आयतें और दो रूकुअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. ये लोग किस चीज़ की पूछताछ कर रहे हैं?

عَمَّ يَتَسَاۗءَلُوْنَ (1)

२. उस बड़ी ख़बर की?

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ (2)

३. जिस में ये कई राय हैं।

الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ (3)

४. यक़ीनी तौर से ये अभी जान लेंगे।

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ (4)

५. फिर यक़ीनी तौर से उन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा।[1]

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ (5)

६. क्या हम ने धरती को फ़र्श नहीं बनाया।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا (6)

७. और पहाड़ों को खूंटा नहीं बनाया।[2]

وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا (7)

---

* **सूरतुन नबा** : जब नबी (ﷺ) को नबूअत से सम्मानित (सरफ़राज़) किया गया और आप ने तौहीद और क़यामत वग़ैरह की चर्चा की और पाक कलाम क़ुरआन सुनाया तो काफ़िरों और मुशरिकों ने एक-दूसरे से सवाल करना शुरू किया कि क्या यह मुमकिन है? जैसा कि यह दावा कर रहे हैं या यह क़ुरआन हक़ीक़त में अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल है, जैसा कि मोहम्मद (ﷺ) कहता है, सवाल के ज़रिये अल्लाह ने पहले इन चीज़ों की हक़ीक़त उजागर की जो उनकी है, फिर ख़ुद ही जवाब दिया।

[1] यह डांट फटकार है कि जल्द ही सब कुछ मालूम हो जायेगा, आगे अल्लाह अपनी कारीगरी और अज़ीम क़ुदरत की चर्चा कर रहा है। ताकि तौहीद की सच्चाई उन के आगे स्पष्ट (वाज़ेह) हो और ईश्दूत उन्हें जिस चीज़ की दावत दे रहा है उस पर यक़ीन करना उन के लिये आसान हो जाये।

[2] اَوْتَاد यह وَتَد का बहुवचन (जमा) है। खूंटे यानी पहाड़ों को धरती के लिये खूंटे बनाये ताकि धरती क़ायम रहे हिले नहीं, क्योंकि हिलने-डोलने की हालत में धरती रहने लायक़ ही नहीं होती।

८. और हम ने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किये ।[1]

وَّ خَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿8﴾

९. और हम ने तुम्हारी नींद को तुम्हारे आराम की वजह बनाया ।[2]

وَّ جَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿9﴾

१०. और रात को हम नें पर्दा बनाया ।

وَّ جَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿10﴾

११. और दिन को हम ने रोजी हासिल करने का समय बनाया ।[3]

وَّ جَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿11﴾

१२. और तुम्हारे ऊपर हम ने सात मजबूत आसमान बनाये ।

وَّ بَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿12﴾

१३. और एक चमकता हुआ रौशन चिराग़ पैदा किया ।

وَّ جَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿13﴾

१४. और बादलों से हम ने मूसलाधार पानी बरसाया ।[4]

وَّ اَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿14﴾

१५. ताकि उस से अन्न और वनस्पति (नबातात) उगायें ।[5]

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّ نَبَاتًا ﴿15﴾

१६. और घने बाग़ भी (उगायें) ।[6]

وَّ جَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿16﴾

---

[1] पुरूष-स्त्री, नर-मादा, यानी أزواج का मतलब क़िस्म और वर्ण है यानी कई रूपों और रंगों में पैदा किया, (ख़ूबसूरत-बदसूरत), लम्बा, छोटा, गोरा, काला, आदि (वग़ैरह) ।

[2] سُبَاتً का मायने काटना है, रात भी जीव-जन्तुओं की सारी हरकतें कम कर देती है ताकि सुकून हो जाये और वे आराम से सो सकें, या मतलब यह है कि रात तुम्हारे कर्मों (अमलों) को ख़त्म कर देती है, काम ख़त्म होने का मतलब आराम है ।

[3] मतलब यह है कि दिन को प्रकाशमान (रौशन) बनाया ताकि लोग रोजी हासिल करने के लिये मेहनत कर सकें ।

[4] مُعصِرَات वह बदलियाँ जो पानी से भरी हुई हो लेकिन अभी बरसी न हों । जैसे المرأة المُعْصِرَة उस औरत को कहते हैं जिसकी विलादत का वक़्त क़रीब हो, ثَجَّاجًا ज़्यादा मूसलाधार पानी ।

[5] حَبٌ (दाना) वह अन्न जिसे खाने के लिये ढेर कर लिया जाता है, जैसे गेहूँ, चावल, जौ, मकाई वग़ैरह और वनस्पतियाँ, तरकारियाँ और चारे वग़ैरह जो जानवर खाते हैं ।

[6] ألفافًا शाखाओं के ज़्यादा होने की वजह से एक-दूसरे से मिले पेड़ यानी घने बाग़ ।

१७. बेशक फ़ैसले का दिन निर्धारित (मुक़र्रर) है।	إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿17﴾
१८. जिस दिन कि नरसिंघ (सूर) फूंका जायेगा, फिर तुम सब दल के दल बन कर आओगे।[1]	يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿18﴾
१९. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उस में दरवाज़े-दरवाज़े हो जायेंगे।	وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿19﴾
२०. और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वे सफेद बालू हो जायेंगे।[2]	وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿20﴾
२१. वेशक नरक घात में है।	إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿21﴾
२२. उद्दण्डियों (सरकशों) की जगह वही है।	لِّلطَّاغِينَ مَآبًا ﴿22﴾
२३. उस में वे कई युगों (और सदियों) तक पड़े रहेंगे।[3]	لَّابِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ﴿23﴾
२४. न कभी उस में ठंड का मज़ा चखेंगे न पानी का।	لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿24﴾
२५. सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के।	إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿25﴾
२६. (उन को) पूरी तरह से बदला मिलेगा।	جَزَاءً وِفَاقًا ﴿26﴾
२७. उन्हें तो हिसाब की उम्मीद ही न थी।	إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿27﴾
२८. वे बेबाकी से हमारी आयतों को झुठलाते थे।	وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿28﴾

[1] कुछ ने इस का मायने यह बयान किया है कि हर क़ौम अपने रसूल के साथ हश्र के मैदान में आयेगी यह दूसरा नफ़ख़ा (फूंक) होगा जिस में सब लोग क़ब्रों से जिन्दा होकर निकल आयेंगे।

[2] سَرَاب वह रेत जो दूर से पानी लगे, पहाड़ भी रेत के समान दूर से दिखने वाली चीज बनकर रह जायेंगे, और फिर बिल्कुल ख़त्म हो जायेंगे उनका निशान तक नहीं रह जायेगा।

[3] أَحْقَاب वहुवचन (जमा) है حُقُب का मतलब है युग (ज़माना)। मतलब सदा और हमेशा है, वह सदा के लिये जहन्नम में रहेंगे, यह अज़ाब काफ़िरों और मुशरिकों के लिये है।

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا ﴿29﴾

२९. हम ने हर बात को लिख कर सुरक्षित (महफ़ूज) रखा है।

فَذُوقُوا۟ فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿30﴾

३०. अब तुम (अपने किये का) मजा चखो, हम तुम्हारा अजाब ही बढ़ाते जायेंगे।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿31﴾

३१. बेशक परहेजगारों के लिये कामयाबी है।

حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا ﴿32﴾

३२. बाग़ात हैं और अंगूर हैं।

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿33﴾

३३. और नवयुवती कुंवारी हम उम्र औरतें हैं।

وَكَأْسًا دِهَاقًا ﴿34﴾

३४. और छलकते हुए मदिरा के प्याले हैं।

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا ﴿35﴾

३५. वहाँ न तो वे अश्लील (लग्व) बातें सुनेंगे और न झूठी बातें सुनेंगे।

جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿36﴾

३६. (उनको) तेरे रब की तरफ से (उनकी नेकियों का) यह बदला मिलेगा जो काफ़ी उपहार (इंआम) होगा।

رَّبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٱلرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿37﴾

३७. (उस) रब की तरफ़ से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का और जो कुछ उस के बीच है उनका रब है और बड़ा दयालु (रहमान) है। किसी को उस से बातचीत करने का हक़ नहीं होगा।

يَوْمَ يَقُومُ ٱلرُّوحُ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ ٱلرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿38﴾

३८. जिस दिन रूह (आत्मा) और फ़रिश्ते सफ़ बाँध कर खड़े होंगे, तो कोई बात न कर सकेगा, लेकिन जिसे बड़ा दयालु (रहमान) आज्ञा दे और वह ठीक बात मुँह से निकाले।

ذَٰلِكَ ٱلْيَوْمُ ٱلْحَقُّ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ مَـَٔابًا ﴿39﴾

३९. यह दिन सच है, अब जो चाहे अपने रब के पास (नेक काम कर के) जगह बना ले।[1]

[1] उस आने वाले दिन को सामने रखते हुए ईमान और तक़्वा का जीवन अपनाये ताकि उस दिन उसे वहाँ अच्छी जगह मिल जाये।

إِنَّآ أَنذَرْنَـٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ ٱلْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ ٱلْكَافِرُ يَـٰلَيْتَنِى كُنتُ تُرَٰبًۢا ﴿40﴾

४०. हम ने तुम्हें क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में घटित (वाक़े) होने वाले अज़ाब से डरा दिया (और आगाह कर दिया) जिस दिन इंसान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता ।[1]

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

सूरतुन नाज़िआत-७९

यह सूरत मक्का में नाज़िल हुई और इस में छियालीस आयतें और दो रूकूअ़ हैं ।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

وَٱلنَّـٰزِعَـٰتِ غَرْقًا ﴿1﴾

१. डूबकर कठोरता (सख़्ती) से खीचनें वालों की क़सम ।[2]

وَٱلنَّـٰشِطَـٰتِ نَشْطًا ﴿2﴾

२. बंधन खोल कर छुड़ाने वालों की क़सम ।

وَٱلسَّـٰبِحَـٰتِ سَبْحًا ﴿3﴾

३. और तैरने फिरने वालों की क़सम ।[3]

---

[1] जब वह अपने भयानक अंजाम का अवलोकन (मुशाहिदा) करेगा तो यह कामना (तमन्ना) करेगा । कुछ कहते हैं अल्लाह जानवरों के बीच भी इंसाफ़ से फ़ैसला करेगा, यहाँ तक कि एक सींग वाली बकरी ने बिना सींग की बकरी पर कोई ज़ुल्म किया होगा तो उस का भी बदला दिलायेगा । इस के बाद अल्लाह जानवरों को हुक्म देगा कि मिट्टी हो जाओ तो वह मिट्टी हो जायेंगे, उस समय काफ़िर भी तमन्ना करेंगे कि काश वह भी जानवर होते और आज मिट्टी बन जाते । (इब्ने कसीर)

[2] **सूरतुन नाज़िआत** : نزع का मतलब है कड़ाई से खींचना । غرقا डूब कर- यह जान निकालने वाले फ़रिश्तों का बयान है, फ़रिश्ते काफ़िरों का प्राण (रूह) बड़ी कड़ाई से निकालते हैं और शरीर में डूबकर ।

[3] سبح का मतलब तैरना है । फ़रिश्ते जान निकालने के लिये इंसान के शरीर (जिस्म) में ऐसे तैरते फिरते हैं, जैसे गोताखोर मोती निकालने के लिये समुद्र की गहराईयों में तैरता है या यह मतलब है कि बहुत तेज़ गति से अल्लाह का हुक्म लेकर आकाशों से उतरते हैं, क्योंकि तेज़ रफ़्तार घोड़े को भी سابح कहते हैं ।

فَالسَّٰبِقَٰتِ سَبْقًا ﴿4﴾

४. फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की क़सम।

فَالْمُدَبِّرَٰتِ أَمْرًا ﴿5﴾

५. फिर कामों का इन्तेज़ाम करने वालों की क़सम।

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ﴿6﴾

६. जिस दिन काँपने वाली काँपेगी।[1]

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ﴿7﴾

७. उस के बाद एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आयेगी।[2]

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ﴿8﴾

८. (बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे।

أَبْصَٰرُهَا خَٰشِعَةٌ ﴿9﴾

९. जिन के नेत्र (निगाहें) नीचे होंगे।

يَقُولُونَ أَءِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ﴿10﴾

१०. कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी हालत में फिर लौटाये जायेंगे?

أَءِذَا كُنَّا عِظَٰمًا نَّخِرَةً ﴿11﴾

११. क्या उस समय जब हम कमज़ोर हड्डियों में हो जायेंगे।

قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿12﴾

१२. कहते हैं कि यह लौटना फिर नुक़सान वाला है। (मालूम होना चाहिये)

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَٰحِدَةٌ ﴿13﴾

१३. वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है कि (जिस के पैदा होते ही)।

فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ﴿14﴾

१४. वह फ़ौरन मैदान में जमा हो जायेंगे।

هَلْ أَتَىٰكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿15﴾

१५. क्या मूसा (عليه السلام) की कहानी भी तुम्हें मालूम है?

---

[1] यह पहला नफ़ख़ा (फूँक) होगा, जिसे विनाश (फ़ना) की फूँक कहते हैं, जिस से पूरी धरती काँपने लगेगी और हर चीज़ बरबाद हो जायेगी।

[2] यह दूसरा नफ़ख़ा होगा, जिस से सब ज़िन्दा हो जायेंगे और क़ब्रों से निकल आयेंगे। यह दूसरा नफ़ख़ा (फूँक) पहले नफ़ख़ा के चालीस साल बाद होगा, इसे رادفة इसलिये कहा जाता है कि यह पहली फूँक के बाद ही होगा यानी दूसरा नफ़ख़ा पहले नफ़ख़े के पीछे होगा।

१६. जबकि उन के रब ने उन्हें पाक मैदान तुवा में पुकारा।[1]

إِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿16﴾

१७. कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ उस ने उद्दण्डता (सरकशी) अपना ली है।

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿17﴾

१८. उस से कहो कि क्या तू अपना सुधार और शोधन (इस्लाह) चाहता है।

فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ﴿18﴾

१९. और यह कि मैं तुझे तेरे रब का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू (उस से) डरने लगे।

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿19﴾

२०. तो उसे बड़ी निशानी दिखायी।

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ﴿20﴾

२१. तो उस ने झुठलाया और नाफ़रमानी की।

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿21﴾

२२. फिर पलटा कोशिश करते हुए।[2]

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿22﴾

२३. फिर सब को जमा करके ऊँची आवाज़ में पुकारा।

فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿23﴾

२४. कहा कि तुम सब का बड़ा रब मैं ही हूँ।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿24﴾

२५. तो (सब से बुलन्द और अज़ीम) अल्लाह ने भी उसे आख़िरत और इस दुनिया के अज़ाबों में घेर लिया।

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿25﴾

[1] यह उस वक़्त की कहानी है जब मूसा (ﷺ) मदयन से वापसी पर आग की खोज में तूर पहाड़ पर पहुँच गये थे तो वहाँ एक पेड़ की आड़ से अल्लाह ने मूसा से बातचीत की, जैसा कि सविस्तार (तफ़सील) सूरत ताहा के शुरू में गुज़रा। طُوًى तुवा उस जगह का नाम है, बात करने से मुराद नबूअत और रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित (सरफ़राज़) करना है यानी मूसा (ﷺ) आग लेने गये और अल्लाह ने उन्हें संदेशवाहक (रसूल) मुक़र्रर कर दिया, जैसे कि आगे फ़रमाया।

[2] यानी उस ने ईमान और हुक्म पालन (पैरवी) से इंकार ही नहीं किया बल्कि धरती में फ़साद फैलाने का और मूसा के मुक़ाबले की कोशिश करता रहा, और जादूगरों को जमा करके मूसा (ﷺ) से मुक़ाबला कराया ताकि उन को झूठा साबित किया जा सके।

२६. बेशक इस में उस इंसान के लिये इबरत (नसीहत) है, जो डरे ।[1]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿26﴾

२७. क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है या आकाश का? अल्लाह तआला ने उसे बनाया ।

ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿27﴾

२८. उस की ऊँचाई बढ़ायी फिर उसे ठीक-ठाक कर दिया ।[2]

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿28﴾

२९. और उस की रात को अंधकारमय बनाया और उस के दिन को निकाला ।

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿29﴾

३०. और उस के बाद धरती को (बराबर) बिछा दिया ।[3]

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ﴿30﴾

३१. उस में से पानी और चारा निकाला ।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿31﴾

३२. और पहाड़ों को (मजबूत) रूप से गाड़ दिया ।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿32﴾

३३. ये सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फ़ायदे के लिये (हैं) ।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿33﴾

३४. तो जब वह बड़ी मुसीबत (क़यामत) आ जायेगी ।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿34﴾

---

[1] इस में नबी (ﷺ) के लिये सांत्वना (तसल्ली) है और मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि अगर उन्होंने पिछले लोगों की घटनाओं (वाक़ेआत) से नसीहत हासिल न की तो उनका अंत फ़िरऔन की तरह हो सकता है ।

[2] कुछ ने سَمْكَ का मायने छत भी किया है, ठीक-ठाक करने का मतलब उसे ऐसी शक्ल में ढालना है जिस में कोई फ़र्क़, फटन और ऐब बाक़ी न रहे ।

[3] यह हा मीम अससज्द: ९ में गुजर चुका है कि خَلَق (पैदा करना) और चीज़ है और دَحىٰ (बराबर करना) दूसरा विषय है, धरती की रचना (बनाना) आकाश से पहले हुई है, लेकिन इस को बराबर आसमान बनाने के बाद किया गया है और यहाँ इसी हक़ीक़त का बयान है और बराबर करने और फैलाने का मतलब धरती को रहने लायक़ बनाने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत है अल्लाह ने उनकी व्यवस्था (तदबीर) की, जैसे धरती से पानी निकाला उस में चारा और अनाज पैदा किया, पहाड़ों को कीलों की तरह मजबूत गाड़ दिया ताकि धरती न डोले जैसाकि यहाँ आगे भी यही बयान है ।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ (35)

३५. जिस दिन कि इंसान अपने किये हुए कर्मों (अमल) को याद करेगा।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ (36)

३६. और (हर) देखने वाले के सामने जहन्नम ज़ाहिर कर दी जायेगी।

فَأَمَّا مَن طَغَىٰ (37)

३७. तो जिस (इंसान) ने उद्दण्डता (सरकशी) अपनायी (होगी)।

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (38)

३८. और दुनियावी ज़िन्दगी को वरीयता (तरजीह) दी (होगी)।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ (39)

३९. तो (उसका) ठिकाना जहन्नम ही है।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ (40)

४०. लेकिन जो इंसान अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा होगा और अपने मन को इच्छाओं से रोका होगा।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ (41)

४१. तो उसकी जगह जन्नत ही है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا (42)

४२. लोग आप से क़यामत (प्रलय) क़ायम होने का समय पूछते हैं।

فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا (43)

४३. आप को उस के बयान करने से क्या सम्बन्ध (ताल्लुक़)?

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا (44)

४४. उस के (इल्म का) अंत तो आप के रब की तरफ़ है।

إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا (45)

४५. आप तो केवल उस से डरते रहने वालों को सावधान (आगाह) करने वाले हैं।[1]

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا (46)

४६. जिस दिन ये उसे देख लेंगे तो ऐसा प्रतीत (महसूस) होगा कि केवल दिन का आख़िरी हिस्सा या पहला हिस्सा ही (संसार में) रहे हैं।

---

[1] यानी आप का काम केवल إنذار (डराना) है, न कि परोक्ष (ग़ैब) की ख़बरें देना, जिस में क़यामत का इल्म है जो अल्लाह ने किसी को नहीं दिया है। مَن يَخْشَاهَا इसलिए कहा कि तंबीह (चेतावनी) और दीन की तबलीग़ से असली फ़ायेदा उसी को मिलता है जिन के दिलों में अल्लाह का डर होता है, नहीं तो डराने और संदेश पहुँचाने का हुक्म तो हर एक के लिये है।

सूरतु अबस-८०

سُورَةُ عَبَسَ

सूरतु अबस मक्का में नाज़िल हुई और इस में बयालिस आयतें और एक रूकूअ़ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ (1)

१. उस ने ख़ट्टा मुंह बनाकर मुंह मोड़ लिया।

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ (2)

२. (केवल इसलिये) कि उस के पास एक अंधा आया।[1]

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّىٰ (3)

३. तुझे क्या पता शायद वह सुधर जाता।

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَىٰ (4)

४. या नसीहतें सुनता और उसे नसीहतें फ़ायेदा पहुँचाती।

أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ (5)

५. (लेकिन) जो लापरवाही करता है।

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّىٰ (6)

६. उसकी तरफ़ तो तू पूरा ध्यान दे रहा है।

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ (7)

७. हालांकि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि (नुक़सान) नहीं।[2]

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَىٰ (8)

८. और जो इंसान तेरी तरफ़ दौड़ता हुआ आता है।

---

[1] **सूरतु अबस** : इस के नाज़िल होने के बारे में सभी मुफ़स्सिरों का इत्तेफ़ाक है कि यह अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक्तूम के बारे में उतरी। एक बार नबी (ﷺ) की ख़िदमत में कुरैश के प्रमुख (सरदार) लोग मौजूद बातें कर रहे थे कि अचानक इब्ने उम्मे मक्तूम जो अंधे थे हाज़िर हुए और नबी (ﷺ) से धर्म की बातें पूछने लगे, नबी (ﷺ) ने इसे बुरा माना और कुछ कम ध्यान दिया, इसलिए तंबीह के तौर पर इन आयतों का अवतरण (नुज़ूल) हुआ। (तिर्मिज़ी, सूरतु अबस, अलबानी ने इस हदीस को सहीह कहा है)

[2] आप को ज़्यादा ध्यान दिलाया गया कि मुख़्लिसों को छोड़ कर मुख़ालिफ़ लोगों की तरफ़ ध्यान देना सही बात नहीं है।

وَهُوَ يَخْشَىٰ ⑨

९. और वह डर (भी) रहा है।

فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ⑩

१०. तो तू उस से बेरुखी बरतता है।

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ⑪

११. यह ठीक नहीं[1] (कुरआन तो) शिक्षा की (चीज) है।

فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ⑫

१२. जो चाहे उस से शिक्षा ले।

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ⑬

१३. यह तो बाइज़्ज़त सहीफ़ों में है।

مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ⑭

१४. जो बुलन्द और पाक और साफ़ है।

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ⑮

१५. ऐसे लिखने वालों के हाथों में है।

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ⑯

१६. जो ऊँचे दर्जे के पवित्र (पाक) हैं।

قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ⑰

१७. अल्लाह की मार, इंसान भी कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।[2]

مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ⑱

१८. उसे किस चीज़ से पैदा किया।

مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ⑲

१९. एक वीर्य (नुतफ़ा) से पैदा किया,[3] फिर उसको अंदाजा पर रखा।

[1] यानी ऐसे लोगों का तो सम्मान बढ़ाने की जरूरत है न कि उन से मुँह फेरने की। इस आयत से यह बात मालूम हुई कि आमंत्रण (दावत) और धर्म के प्रचार (तबलीग) में किसी को विशेष नहीं करना चाहिये। बल्कि अमीर-गरीब, मालिक-नौकर, नर-नारी, छोटे-बड़े को एक तरह समझा जाये और सब को एक साथ सम्बोधित (मुख़ातिब) किया जाये, अल्लाह जिसे चाहेगा अपनी हिक्मत से हिदायत से सम्मानित (सरफ़राज) करेगा।

[2] इस से वह इंसान मुराद है जो बिना दलील और सुबूत के क़यामत का इंकार करते हैं قُتِلَ का मतलब لُعِنَ और مَا أَكْفَرَهُ ताज्जुब के तौर पर है, कितना नाशुक्रा है, आगे इस नाशुक्रे इंसान को गौर-फ़िक्र करने का आमन्त्रण (दावत) दिया जा रहा है ताकि हो सकता है वह अपने कुफ़्र से रुक जाये।

[3] यानी जिसकी उत्पत्ति (पैदाईश) ऐसी तुच्छ (हक़ीर) पानी की बूँद से हुई है, क्या उसे घमंड शोभा (ज़ीनत) देता है।

ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ (20)

२०. फिर उस के लिये रास्ता आसान किया।

ثُمَّ اَمَاتَهُ فَاَقْبَرَهُ (21)

२१. फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में गाड़ दिया।

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهُ (22)

२२. फिर जब चाहेगा उसे जीवन प्रदान (अता) करेगा।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهُ (23)

२३. कभी नहीं, उस ने अब तक अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) नहीं किया।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ (24)

२४. इन्सान को चहिए कि अपने आहार (खाने) की तरफ़ देख ले।

اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا (25)

२५. कि हम ने ख़ूब पानी बरसाया।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا (26)

२६. फिर धरती को अच्छी तरह फाड़ा,

فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا (27) وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا (28)

२७-२८. फिर उस में अन्न उपजाये और अंगूर और तरकारी

وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا (29)

२९. और ज़ैतून और खजूर

وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا (30)

३०. और घने बाग़

وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا (31)

३१. और सूखे फल और (घास) चारा[1] भी

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ (32)

३२. तुम्हारे प्रयोग (इस्तेमाल) और फ़ायदे के लिये और तुम्हारे चौपाये के लिये

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ (33)

३३. फिर जब कान बहरे करने वाली (क़यामत)[2] आ जायेगी

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ (34)

३४. तो आदमी उस दिन भागेगा अपने भाई से

وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ (35)

३५. अपनी माँ और बाप से

---

[1] اَبًّا वह घास चारा जो ख़ुद उगता है जिसे पशु खाते हैं।

[2] क़यामत (प्रलय) को صَاخَّة बहरा करने वाली इसलिये कहा कि वह एक तेज़ चीख़ के साथ घटित (वाक़े) होगी जो कानों को बहरा कर देगी।

وَصَاحِبَتِهِۦ وَبَنِيهِ ﴿36﴾

३६. अपनी पत्नी और संतान (औलाद) से

لِكُلِّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿37﴾

३७. उन में से हर एक को उस दिन एक ऐसी फ़िक्र (ग़म) होगी जो उसे (मशग़ूल रखने को) काफ़ी होगी ।[1]

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿38﴾

३८. बहुत से चेहरे उस दिन रौशन होंगे ।[2]

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿39﴾

३९. (जो) हँसते हुए ख़ुश होंगे ।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿40﴾

४०. और बहुत से चेहरे उस दिन धूल मे अटे होंगे ।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿41﴾

४१. उन पर कलिमा (स्याही) चढ़ी होगी ।

أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَفَرَةُ ٱلْفَجَرَةُ ﴿42﴾

४२. वे यही काफ़िर दुराचारी लोग होंगे ।

सूरतुत तकवीर-८१

سُورَةُ التَّكْوِيرِ

सूरतुत तकवीर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में उन्तीस आयतें हैं ।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

---

[1] या अपने क़रीबी रिश्तेदारों और दोस्तों से बेनियाज़ और बेपरवाह कर देगा । हदीस में आता है कि नबी (ﷺ) ने फ़रमाया : सब लोग हश्र के मैदान में नंगे शरीर नंगे पावों पैदल और बिना ख़तना के होंगे हज़रत आयेशा ने सवाल किया, इस तरह शर्मगाहों पर निगाह नहीं पड़ेगी, आप ने इस के जवाब में यही आयत पढ़ी, यानी (لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ) संक्षिप्त (मुख़्तसर) आयत ।

[2] यह ईमान वालों के चेहरे होंगे जिन को उन के कर्मपत्र (आमालनामा) उन के दायें हाथ में मिलेंगे, जिस से उन्हें अपनी आख़िरत की सआदत (सौभाग्य) और कामयाबी का यक़ीन हो जायेगा जिस से उन के चेहरे ख़ुशी से दमक रहे होंगे ।

* **सूरतुत तकवीर** : इस सूरह में ख़ास तौर से क़यामत का चित्रण (ज़िक्र) किया गया है । इसीलिये रसूल अल्लाह (ﷺ) का कथन है कि जो इंसान चाहे कि क़यामत को इस तरह देखे जैसे आँखों से देखा जाता है तो उसे चाहिए कि वह (إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ) और (إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَتْ) ध्यान से पढ़े । (तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरतुत तकवीर, मुसनद अहमद २।२७,३६, १०० ज़करुहुल अलबानी फ़िस सहीह: न॰ १०८१, भाग-३)

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿1﴾

१. जब सूरज लपेट लिया जायेगा ।[1]

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ﴿2﴾

२. और जब सितारे बिना प्रकाश (रौशनी) के हो जायेंगे ।

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿3﴾

३. और जब पहाड़ चलाये जायेंगे ।

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿4﴾

४. और जब गर्भवती (हामेला) ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी ।[2]

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿5﴾

५. और जब वन प्राणी (वहशी, दरिंद्र) जमा किये जायेंगे ।

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿6﴾

६. और जब समुद्र भड़काये जायेंगे ।

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿7﴾

७. और जब प्राणें (रूहें) मिला दी जायेंगी ।

وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿8﴾

८. और जब जिन्दा गाड़ी गयी लड़कियों से सवाल किया जायेगा ।

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ﴿9﴾

९. कि किस पाप की वजह से उन को क़त्ल किया गया ।

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿10﴾

१०. और जब कर्मपत्र (आमालनामा) खोल दिये जायेंगे ।[3]

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿11﴾

११. और जब आकाश की खाल खींच ली जायेगी ।[4]

---

[1] यानी जिस तरह सिर पर पगड़ी लपेटी जाती है, उसी तरह सूरज को लपेट दिया जायेगा, जिस की वजह से उसकी रौशनी ख़ुद ख़त्म हो जायेगी ।

[2] عِشَار बहुवचन (जमा) है عُشَرَاء का गर्भवती (हामेला) यानी गाभिन ऊँटनियाँ जब उनका गर्भ (हमल) दस महीनों का हो जाता है तो अरबों में यह पसन्दीदा और क़ीमती मानी जाती थीं । जब क़यामत होगी तो ऐसा भयानक दृश्य (मंज़र) होगा कि अगर किसी के पास इस तरह की क़ीमती ऊँटनियाँ होंगी तो उन्हें भी छोड़ देगा और उनकी परवाह नहीं करेगा ।

[3] मौत के वक़्त यह कर्मपत्र (आमालनामा) लपेट दिये जाते हैं, फिर क़यामत के दिन हिसाब के लिये खोल दिये जायेंगे जिन्हें हर इंसान देख लेगा बल्कि हाथों में पकड़वा दिये जायेंगे ।

[4] यानी वह इस तरह उधेड़ दिये जायेंगे जैसे छत उधेड़ दी जाती है ।

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿12﴾

१२. और जब जहन्नम भड़कायी जायेगी।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿13﴾

१३. और जब जन्नत क़रीब कर दी जायेगी।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿14﴾

१४. तो उस दिन हर इंसान यह जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा।

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿15﴾

१५. मैं क़सम खाता हूं पीछे हटने वाले।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿16﴾

१६. चलने-फिरने वाले छिपने वाले सितारों की।

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿17﴾

१७. और रात की जब जाने लगे।[1]

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿18﴾

१८. और सुबह की जब चमकने लगे।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿19﴾

१९. बेशक यह एक बाइज़्ज़त रसूल का कथन (क़ौल) है।

ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿20﴾

२०. जो ताक़त वाला है, अर्श वाले (अल्लाह) के क़रीब बुलन्द मर्तबा है।

مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿21﴾

२१. जिसका वहां (आसमानों पर आज्ञा का) पालन किया जाता है (वह) न्यासिक (अमीन) है।

وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿22﴾

२२. और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।[2]

وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿23﴾

२३. उस ने उस (फ़रिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।

---

[1] عَسْعَسَ का दोनों मतलब है आना और जाना, यह इन दोनों ही मायनों में इस्तेमाल होता है, फिर भी यहां जाने के मायने में है।

[2] यह ख़िताब मक्का के लोगों को है और साथी से मुराद रसूल अल्लाह (ﷺ) हैं यानी जो तुम सोंचते हो कि तुम्हारा साथी मोहम्मद (ﷺ) نَعُوذُ بِالله दीवाना है तो ऐसा नहीं, तनिक क़ुरआन पढ़कर तो देखो क्या कोई पागल ऐसे इल्म और हिक्मत का बयान कर सकता है और पिछली समुदायों (क़ौम) की सही-सही हालत बता सकता है जो इस क़ुरआन में बयान किये गये हैं।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ (24)

२४. और यह परोक्ष (ग़ैब) की बातें बताने में कंजूस भी नहीं हैं ।[1]

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ (25)

२५. और यह (क़ुरआन) धिक्कृत (मरदूद) शैतान का क़ौल नहीं ।

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ (26)

२६. फिर तुम कहाँ जा रहे हो ।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ (27)

२७. यह तो सारी दुनिया वालों के लिए नसीहत है ।

لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ (28)

२८. (ख़ास तौर से उस के लिये) जो तुम में से सीधे रास्ता पर चलना चाहे ।

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ (29)

२९. और तुम बिना सारी दुनिया के रब के चाहे कुछ नहीं चाह सकते ।[2]

सूरतुल इंफ़ितार-८२

سُورَةُ الانْفِطَار

सूरतुल इंफ़ितार मक्का में नाज़िल हुई और इस में उन्नीस आयतें हैं ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

إِذَا ٱلسَّمَآءُ ٱنفَطَرَتْ (1)

१. जब आकाश फट जायेगा ।

وَإِذَا ٱلْكَوَاكِبُ ٱنتَثَرَتْ (2)

२. और जब सितारे झड़ जायेंगे ।

---

[1] यह नबी (ﷺ) के बारे में स्पष्ट (वाज़ेह) किया जा रहा है कि आप को जिन बातों की ख़बर दी जाती है, जो आज्ञा (अहकाम) और फ़रायेज़ आप को बतलाये जाते हैं इन में से कोई बात आप अपने पास नहीं रखते, बल्कि संदेश (पैग़ाम) पहुँचाने के ज़िम्मेदारी का एहसास करते हुए हर बात और हुक्म लोगों को पहुँचा देते हैं ।

[2] यानी तुम्हारी चाहत अल्लाह की मेहरबानी पर निर्भर (मुन्हसिर) है जब तक तुम्हारी चाहत के साथ अल्लाह की इच्छा और दया भी शामिल न हो उस समय तक तुम सीधा रास्ता नहीं अपना सकते । यह वही विषय है जो आयत (إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ) वग़ैरह में बयान हुआ है ।

३. और जब समुद्र बह चलेंगे।

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ﴿3﴾

४. और जब क़ब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जायेंगी।

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ﴿4﴾

५. उस समय हर इंसान अपने आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए (यानी अगले-पिछले कर्मों को) जान लेगा।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ﴿5﴾

६. हे इंसान! तुझे अपने दयालु रब से किस चीज़ ने बहकाया।[1]

يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿6﴾

७. जिस (रब ने) तुझे पैदा किया फिर ठीक-ठाक किया फिर (मुनासिब तरीक़े से) बराबर बनाया।

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ﴿7﴾

८. जिस रूप में चाहा तुझे बना दिया और तुझे ढाला।[2]

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿8﴾

९. कभी नहीं, बल्कि तुम तो सज़ा और बदले के दिन को झुठलाते हो।

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ﴿9﴾

१०. बेशक तुम पर रक्षक (निगराँ)

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ﴿10﴾

११. इज़्ज़त वाले-लिखने वाले निर्धारित (मुक़र्रर) हैं।

كِرَامًا كَاتِبِينَ ﴿11﴾

१२. जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿12﴾

१३. बेशक नेक लोग (जन्नत के ऐशो आराम और) नेमतों से फ़ायेदा उठाने वाले होंगे।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿13﴾

---

[1] यानी किस चीज़ ने तुझे धोखे में डाल दिया कि तूने अपने रब के साथ कुफ़्र किया जिस ने तुझे अस्तित्व (वजूद) दिया, तुझे समझ बूझ दी और ज़िन्दगी के सामान तेरे लिए तैयार किये।

[2] इसका एक मतलब तो यह है अल्लाह बच्चे को जिस तरह चाहे कर दे। बाप के, माँ के या मामू या चचा की तरह। दूसरा मतलब है वह जिस रूप में चाहे ढाल दे यहाँ तक कि बदसूरत जानवर की तरह भी पैदा कर सकता है, लेकिन यह उसका करम और मेहरबानी है कि वह ऐसा नहीं करता और अच्छे इंसानी रूप में ही पैदा करता है।

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿14﴾

१४. और यक़ीनी तौर से बुरे लोग जहन्नम में होंगे।

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿15﴾

१५. बदले वाले दिन उस में जायेंगे।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿16﴾

१६. वे उस में से कभी ग़ायब न हो पायेंगे।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿17﴾

१७. तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है?

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿18﴾

१८. मैं दोबारा (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (और सज़ा) का दिन क्या है।

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴿19﴾

१९. (वह है) जिस दिन कोई इंसान किसी इंसान के लिये किसी चीज़ का मुख़्तार न होगा, और सभी हुक्म उस दिन अल्लाह के ही होंगे।

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन-८३

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन* मक्का मे नाज़िल हुई और इस में छत्तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ﴿1﴾

१. बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये।

الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿2﴾

२. कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा-पूरा लेते हैं।

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ﴿3﴾

३. और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं तो कम देते हैं।

* **सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन** : कुछ लोग इसे मक्की और कुछ मदनी क़रार देते हैं, कुछ के ख़्याल से मक्का और मदीना के बीच नाज़िल हुई, इस के अवतरण (नुज़ूल) के बारे में यह रिवायत है कि जब नबी (ﷺ) मदीने में आये तो मदीना के लोग नाप-तौल में बहुत बुरे लोग थे इसलिए अल्लाह ने यह सूरत उतारी, जिस के बाद उन्होंने अपनी नाप-तौल सुधार ली।

أَلَا يَظُنُّ أُولَٰٓئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ﴿4﴾

४. क्या उन्हें अपने मरने के बाद ज़िन्दा हो उठने का यक़ीन नहीं है।

لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿5﴾

५. उस बड़े भारी दिन के लिए।

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿6﴾

६. जिस दिन सभी लोग सारी दुनिया के रब के सामने खड़े होंगे।

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ الْفُجَّارِ لَفِى سِجِّينٍ ﴿7﴾

७. बेशक बदकारों का कर्मपत्र (आमालनामा) सिज्जीन में है।[1]

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ ﴿8﴾

८. तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है?

كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ﴿9﴾

९. (यह तो) लिखी हुई किताब है।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿10﴾

१०. उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गति (ख़राबी) है।

الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿11﴾

११. जो बदले और सज़ा के दिन को झुठलाते रहे।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهِۦٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿12﴾

१२. उसे केवल वही झुठलाता है, जो हद से तजावुज़ कर जाने वाला और पापी होता है।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿13﴾

१३. जब उस के पास हमारी आयतों का पाठ (तिलावत) होता है, तो कह देता है कि यह पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।

كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿14﴾

१४. यह नहीं! बल्कि उन के दिलों पर उन के कर्म (अमल) की वजह से मोरचा (ज़ंग) चढ़ गया है।

---

[1] سِجِّين सिज्जीन कुछ कहते हैं कि سِجْن (कारागार) से है यानी जेल की तरह एक तंग जगह है। कुछ कहते हैं कि यह पाताल में एक जगह है जहाँ काफ़िरों, बहुदेववादियों (मुशरिकों) और ज़ालिमों की आत्मायें (रूहें) और उन के कर्मपत्र (आमालनामा) जमा और महफ़ूज़ होते हैं, इसलिए आगे उसे लिखी हुई किताब कहा है।

كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿15﴾

१५. यही नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन (ज़ियारत) से भी वंचित (महरूम) रहेंगे।[1]

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿16﴾

१६. फिर ये लोग यक़ीनी तौर से जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿17﴾

१७. फिर कह दिया जायेगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे।

كَلَّآ إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿18﴾

१८. अवश्य अवश्य सदाचारियों का कर्मपत्र (आमालनामा) इल्लीईन में है।[2]

وَمَآ أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿19﴾

१९. तुझे क्या पता कि इल्लीईन क्या है?

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿20﴾

२०. (वह तो) लिखी हुई किताब है।

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿21﴾

२१. उसके निकट समीपवर्ती (मुक़र्रब) फ़रिश्ते मौजूद होते हैं।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿22﴾

२२. यक़ीनी तौर से सदाचारी लोग बड़े सुख में होंगे।

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿23﴾

२३. मसहरियों पर (बैठे) देख रहे होंगे।

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿24﴾

२४. तू उन के मुँह से ही सुखों की ताज़गी को पहचान लेगा।[3]

يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿25﴾

२५. ये लोग बहुत शुद्ध (मुहरबन्द) शराब पिलाये जायेंगे।[4]

---

[1] इस के विपरीत ईमान वाले अल्लाह के दर्शन (ज़ियारत) से सम्मानित (सरफ़राज़) होंगे।

[2] عِلِّيِّين इल्लीईन عُلُوّ उलू (ऊँचाई) से है। यह सिज्जीन के विपरीत आकाशों में या स्वर्ग या सिद्रतुल मुन्तहा या अर्श (अल्लाह के सिंहासन) के पास जगह है जहाँ नेक लोगों की आत्मायें (रूहें) और उन के कर्मपत्र महफ़ूज़ होते हैं जिस के क़रीब मुक़र्रब फ़रिश्ते मौजूद रहते हैं।

[3] जिस तरह दुनियाँ के ख़ुशहाल लोगों के चेहरे पर आम तौर से ताज़गी और हरियाली होती है जो उन के सुख-सुविधाओं का द्योतक (मज़हर) होती है जो उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा से हासिल होती है। इसी तरह जन्नत वालों पर आदर-सम्मान और उपहारों की जो अधिकता होगी उस के असर उन के चेहरों पर भी दिखाई पड़ेंगे और अपनी ख़ूबसूरती, ज़ीनत, रौशनी और नूर से पहचान लिये जायेंगे कि वह स्वर्गीय (जन्नती) हैं।

[4] رَحِيق रहीक़ पाक या साफ़ शराब को कहते हैं जिस में किसी चीज़ की मिलावट न हो। مَخْتُوم मुहर लगी हुई, इस की सफ़ाई की ज़्यादा स्पष्टीकरण (वज़ाहत) के लिये है।

خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۭ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿26﴾

२६. जिस में कस्तूरी की मुहर लगी होगी इच्छा (तमन्ना) करने वालों को उसी की ही इच्छा करनी चाहिये।

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿27﴾

२७. और उस में तस्नीम की मिलावट होगी।[1]

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿28﴾

२८. यानी वह जल श्रोत (चश्मे) जिसका पानी निकटवर्ती (मुक़र्रब) लोग पीयेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿29﴾

२९. बेशक पापी लोग ईमान वालों का मज़ाक उड़ाया करते थे।

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿30﴾

३०. और उनके क़रीब से गुज़रते हुए कनखियों (और इशारे से) उनकी बेइज़्ज़ती करते थे।[2]

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿31﴾

३१. और जब अपनों की तरफ़ लौटते तो दिल्लगी करते थे।

وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ لَضَاۗلُّوْنَ ﴿32﴾

३२. और जब उन्हें देखते तो कहते कि बेशक ये लोग गुमराह (कुमार्ग) हैं।[3]

وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿33﴾

३३. ये उन पर रक्षक (निगराँ) बनाकर तो नहीं भेजे गये।

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿34﴾

३४. तो आज ईमानवाले उन काफ़िरों पर हँसेंगे।

---

[1] تَسْنِيْم का मतलब ऊँचाई है, ऊँट की कोहान जो उस के शरीर से ऊँची होती है उस سِنَام सिनाम कहा जाता है। क़ब्र के ऊँचा करने को भी تَسْنِيْمُ الْقُبُوْر तसनीमुल क़ुबूर कहा जाता है, मतलब यह है कि उस में तसनीम नाम की शराब की मिलावट होगी, जो स्वर्ग के ऊपरी हिस्सों से एक चश्मा (श्रोत) के ज़रिये आयेगी यह जन्नत की सब से अच्छी और बेहतर शराब होगी।

[2] غَمْز का मतलब होता है पल्कों और भवों से इशारा करना, यानी एक-दूसरे को पल्कों और भवों का इशारा करके उनकी बेइज़्ज़ती और उन के धर्म पर ताना करते थे।

[3] यानी मुसलमान, मुशरिकों की निगाह में और ईमान वाले काफ़िरों की नज़र में गुमराह (कुपथ) होते हैं, यही हालत आज भी है, गुमराह अपने को सच्चा और सच्चे को गुमराह विश्वास (यक़ीन) कराते हैं।

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ (35)

३५. सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ (36)

३६. कि अब इंकार करने वालों ने जैसा ये किया करते थे पूरा-पूरा बदला पा लिया।[1]

سُورَةُ الْانْشِقَاقِ

सूरतुल इंशिक़ाक़-८४

सूरतुल इंशिक़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई और इस में पच्चीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ (1)

१. जब आकाश फट जायेगा।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ (2)

२. और अपने रब के हुक्म को कान लगाकर सुनेगा, और उसी के लायक़ वह है।

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ (3)

३. और धरती (खींच कर) फैला दी जायेगी।

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ (4)

४. और उस में जो है उगल देगी और ख़ाली हो जायेगी।[2]

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ (5)

५. और अपने रब के हुक्म पर कान लगायेगी, और उसी के लायक़ वह है।

يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ (6)

६. हे इंसान! तू अपने रब से मिलने तक यह कोशिश और सभी काम और मेहनत करके उस से मुलाक़ात करने वाला है।

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ (7)

७. तो उस समय जिस इंसान के दाहिने हाथ में कर्मपत्र (आमालनामा) दिया जायेगा।

---

[1] ثُوِّبَ का मतलब है أُثِيبَ बदला दिये गये, यानी क्या काफ़िरों को वह जो कुछ करते थे बदला दिया गया है।

[2] यानी जो मुर्दे ज़मीन में गड़े हैं, सब ज़िन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे, जो ख़ज़ाने उस के भीतर मौजूद हैं वह उन्हें ज़ाहिर कर देगी और ख़ुद बिल्कुल ख़ाली हो जायेगी।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ⑧

८. उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जायेगा।[1]

وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ⑨

९. और वह अपने परिवार वालों की तरफ़ ख़ुश होकर लौट आयेगा।

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ⑩

१०. लेकिन जिस इंसान का कर्मपत्र (आमालनामा) उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा।

فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ⑪

११. तो वह मौत को बुलाने लगेगा।

وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ⑫

१२. और भड़कती हुई जहन्नम में दाखिल होगा।

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ⑬

१३. यह इंसान अपने परिवार में (संसार में) ख़ुश था।

إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ⑭

१४. उसका विचार था कि अल्लाह की तरफ़ लौटकर ही न जायेगा।

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ⑮

१५. यह कैसे हो सकता है, हालांकि उसका रब उसे अच्छी तरह देख रहा था।

فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ⑯

१६. मुझे शाम की लाली (सुर्ख़ी) की क़सम।[2]

---

[1] सरल हिसाब यह है कि मोमिन का आमालनामा पेश किया जायेगा उस के दोष (गुनाह) भी उस के सामने लाये जायेंगे फिर अल्लाह अपनी रहमत और फ़ज़्ल से उसे माफ़ कर देगा। हज़रत आयेशा फ़रमाती हैं कि रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया : जिसका हिसाब लिया गया वह बर्बाद हो गया। मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! अल्लाह मुझे आप पर बलिदान (क़ुर्बान) करे, क्या अल्लाह ने नहीं फ़रमाया कि जिस के दायें हाथ में कर्मपत्र दिया गया उसका हिसाब आसान होगा। (हज़रत आयेशा का मतलब यह था कि इस आयत के मुताबिक़ तो मोमिन का भी हिसाब होगा लेकिन वह तबाही से दोचार नहीं होगा)। आप ने स्पष्ट (वाज़ेह) किया «यह तो पेशी है» यानी मोमिन के साथ हिसाब का मामला नहीं होगा एक सरसरी पेशी होगी। मोमिन अल्लाह के आगे पेश किये जायेंगे जिस से पूछताछ हुई वह मारा गया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल इंशिक़ाक़)

[2] शफ़क़ उस लाली को कहते हैं जो सूरज के डूबने के बाद आकाश में प्रकट (ज़ाहिर) होती है और ईशा का समय शुरू होने तक रहती है।

१७. और रात की और उसकी जमा चीज़ों की क़सम ।

وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿17﴾

१८. और पूरे चाँद की क़सम ।[1]

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿18﴾

१९. बेशक तुम एक हालत से दूसरी हालत में पहुँचोगे ।[2]

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿19﴾

२०. उन्हें क्या हो गया है कि ईमान (विश्वास) नहीं लाते ।

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿20﴾

२१. और जब उन के पास क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते ।[3]

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿21﴾

२२. बल्कि जिन्होंने कुफ़्र किया वह झुठला रहे हैं ।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿22﴾

२३. और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है, जो कुछ ये दिलों में रखते हैं ।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿23﴾

२४. तो उन्हें दर्दनाक अज़ाबों की ख़ुशख़बरी सुना दे ।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿24﴾

२५. लेकिन ईमानवालों और सदाचारियों (नेक लोगों) को अनगिनत और बेशुमार बदला दिया जायेगा ।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿25﴾

---

[1] إِذَا اتَّسَقَ का मतलब है जब वह पूरा हो जाये जैसे वह तेरहवीं की रात से सोलहवीं तारीख़ तक की रात में रहता है ।

[2] طَبَق का असल मायने कठिनाई है, यहाँ अभिप्राय (मुराद) वह कठिनाईयाँ हैं जो क़यामत के दिन घटित (वाक़ेअ) होंगी यानी उस दिन एक से बढ़कर एक हालत आयेगी (फ़तहुल बारी, तफ़सीर सूरतुल इंशिक़ाक़) यह क़सम का जवाब है ।

[3] हदीसों से यहाँ नबी (ﷺ) और सहाबा का सज्दा करना सिद्ध (साबित) है ।

सूरतुल बुरूज-८५

سُورَةُ الْبُرُوجِ

सूरतुल बुरूज मक्का में नाज़िल हुई और इस में बाईस आयतें हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿1﴾

१. बुर्जों वाले आकाश की क़सम।[1]

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿2﴾

२. वादा किये हुए दिन की क़सम।

وَشَاهِدٍ وَّ مَشْهُوْدٍ ﴿3﴾

३. हाज़िर होने वाले और हाज़िर किये गये की क़सम।[2]

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿4﴾

४. (कि) खाई वाले मारे गये।

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿5﴾

५. वह एक आग थी ईंधन वाली।

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿6﴾

६. जबकि वह लोग उस के आसपास बैठे थे।

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿7﴾

७. और मुसलमानों के साथ जो कर रहे थे उस को अपने सामने देख रहे थे।

सूरतुल बुरूज : नबी (ﷺ) जोहर और असर में सूरतुत्तारिक और सूरतुल बुरूज पढ़ते थे। (तिर्मिजी)

[1] بُرُوج यह بُرْج (भवन का गुंबद) का बहुवचन (जमा) है بُرْج का असल मायेना है ज़ुहूर, यह सितारों की मंज़िलें हैं जिन्हें उन के घर की हैसियत हासिल है ज़ाहिर और रौशन होने के वजह से उन्हें बुरूज कहा जाता है, तफ़सील के लिये देखिये अलफ़ुरक़ान ६१ का हाशिया। कुछ ने बुरूज से मुराद सितारे लिये हैं यानी सितारों वाले आकाश की क़सम। कुछ के ख़्याल में इस से आकाश के दरवाज़े या चांद की मंज़िल मुराद है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] شَاهِد और مَشْهُود की व्याख्या (तफ़सीर) में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। इमाम शौकानी ने हदीसों और रिवायतों की बिना पर कहा है कि शाहिद से मुराद जुमा (शुक्रवार) का दिन है। इस दिन जिस ने जो कर्म (अमल) किया होगा यह क़यामत के दिन उसकी गवाही देगा और मशहूद से अर्फ़ा (९ ज़िलहिज्जा) का दिन है, जहां लोग हज के लिये जमा और हाज़िर होते हैं।

وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَن يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿8﴾

८. ये लोग उन मुसलमानों से किसी दूसरे पाप का बदला नहीं ले रहे थे, सिवाय इस के कि वे बड़े ग़ालिब तारीफ़ के लायक़ अल्लाह की ताक़त पर ईमान लाये थे।[1]

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿9﴾

९. जिस के लिये आकाशों और धरती का राज्य है और अल्लाह (तआला) के सामने है हर वस्तु (चीज़)।

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ﴿10﴾

१०. बेशक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को सताया, फिर माफ़ी भी न माँगी, उन के लिये नरक की यातना (अज़ाब) है और जलने का अज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿11﴾

११. बेशक ईमान क़ुबूल करने वालों और नेक काम करने वालों के लिए वे बाग़ हैं जिन के नीचे (ठंडे पानी की) नहरें बह रही हैं, यह बड़ी कामयाबी है।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿12﴾

१२. बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿13﴾

१३. वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा ज़िन्दा करेगा।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿14﴾

१४. वह बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत प्रेम करने वाला है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿15﴾

१५. अर्श का स्वामी (मालिक) महान है।

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿16﴾

१६. जो चाहे उसे कर देने वाला है।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿17﴾

१७. तुझे सेनाओं की ख़बर भी मिली है।

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿18﴾

१८. यानी फ़िरऔन और समूद की।

---

[1] यानी उन लोगों का अपराध जिनको आग में झोंका जा रहा था यह था कि वह प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) अल्लाह पर ईमान लाये थे इस वाक़िआ का बयान सहीह हदीसों में मौजूद है।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿19﴾

१९. (कुछ नहीं) वल्कि काफ़िर तो झुठलाने में पड़े हुए हैं।

وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿20﴾

२०. और अल्लाह (तआला) भी उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿21﴾

२१. वल्कि यह क़ुरआन है बहुत महिमा (तारीफ़) वाला।

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿22﴾

२२. सुरक्षित (महफ़ूज़) किताब में लिखा है।

सूरतुत्तारिक़-८६

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरतुत्तारिक़* मक्का उतरी और इस में सतरह आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿1﴾

१. क़सम है आसमान की और अंधेरे में प्रकट (ज़ाहिर) होने वाले की।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿2﴾

२. तुझे मालूम भी है कि वह रात को ज़ाहिर होने वाली चीज़ क्या है।

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿3﴾

३. वह रौशनी वाला सितारा है।[1]

إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿4﴾

४. कोई ऐसा नहीं जिस पर रक्षक (फ़रिश्ते) न हों।[2]

---

* **सूरतुत्तारिक़** : हज़रत ख़ालिद उदवानी ने कहा कि मैंने रसूल अल्लाह (ﷺ) को सक़ीफ़ के बाज़ार में धनुष या लाठी के सहारे खड़े देखा, आप उन के पास उन से मदद लेने आये थे, वहां मैंने आप से सूरतुत्तारिक़ सुनी और मैंने उसे याद कर लिया, जब कि मैं अभी मुसलमान नहीं हुआ था फिर मुझे अल्लाह ने इस्लाम से सम्मानित (सरफ़राज़) किया और इस्लाम की हालत में मैंने उसे पढ़ा। (मुसनद अहमद ४\३३५)

[1] तारिक़ से क्या मुराद है, क़ुरआन ने ख़ुद साफ़ कर दिया प्रकाशमान (रौशन) सितारा। طارق बना है طُرُوق से जिसका मतलब खटखटाना है, लेकिन طارق रात के आने वाले के लिए इस्तेमाल होता है, तारों को भी तारिक़ इसी वजह से कहा जाता है कि वह दिन को छुप जाते और रात को निकलते हैं।

[2] यानी हर जान पर अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते तैनात हैं जो उसके भले-बुरे सभी कर्म (अमल) लिखते हैं।

فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ⑤

५. इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज से बनाया गया है।

خُلِقَ مِن مَّاءٍ دَافِقٍ ⑥

६. वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है।

يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ⑦

७. जो पीठ और छाती के बीच से निकलता है।

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ⑧

८. बेशक वह उसे फेर लाने पर जरूर सामर्थ्य (क़ुदरत) रखने वाला है।[1]

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ⑨

९. जिस दिन छिपे भेदों (राज) की जाँच पड़ताल होगी।

فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ⑩

१०. तो न कोई जोर चलेगा उसका और न कोई मददगार होगा।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ⑪

११. वर्षा वाले आकाश की क़सम।[2]

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ⑫

१२. और फटने वाली धरती की क़सम।[3]

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ⑬

१३. बेशक यह (क़ुरआन) यक़ीनन दो टूक फ़ैसले करने वाली भाषा (जुबान) है।

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ⑭

१४. और यह हँसी की (और बेकार की) बात नहीं।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ⑮

१५. लेकिन वे (काफ़िर) दाँव-घात में हैं।[4]

---

[1] यानी इंसान के मरने के बाद वह उसे दोबारा जिन्दा करने पर सामर्थ्य (क़ादिर) है।

[2] رَجْع का शाब्दिक अर्थ (लफ़्जी मायने) है, लौटना और पलटना, वर्षा भी बार-बार पलट-पलट कर होती है, इसलिए वर्षा को رَجْع के शब्द से व्यंजित (ताबीर) किया गया है। कुछ कहते हैं कि बादल समुद्रों से पानी लेता है फिर वही पानी समुद्र को पलटा देता है, इसलिए वर्षा को رَجْع कहा जाता है।

[3] यानी धरती फटती है तो उस से पौधा बाहर निकलता है, धरती फटती है तो चश्मा (स्रोत) जारी हो जाता है। इसी तरह एक दिन आयेगा कि धरती फटेगी और मुर्दे जिन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे इसलिये धरती को फटने वाली कहा गया है।

[4] यानी नबी (ﷺ) जो धर्म लेकर आये हैं उसे नाकाम करने की साजिश रचते हैं, या नबी (ﷺ) को धोखा देते हैं और मुंह पर ऐसी बातें करते हैं कि दिल में उसके ख़िलाफ़ होता है।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿16﴾

१६. और मैं भी एक दांव चल रहा हूं।[1]

فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿17﴾

१७. तू काफ़िरों को मौक़ा दे, उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ

सूरतुल आला-८७

सूरतुल आला* मक्का में नाज़िल हुई और इसमें उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿1﴾

१. अपने बहुत ही बुलन्द रब के नाम की पाकी बयान कर।[2]

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿2﴾

२. जिस ने पैदा किया और सही और स्वस्थ (सेहतमंद) बनाया।

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ﴿3﴾

३. और जिस ने अंदाज़ा लगाकर मुक़र्रर किया फिर रास्ता दिखाया।

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿4﴾

४. और जिस ने ताज़ा घास पैदा की।

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿5﴾

५. फिर उस ने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسَىٰ ﴿6﴾

६. हम तुझे पढ़ायेंगे, फिर तू न भूलेगा।

---

[1] यानी उनकी चालों और षडयंत्रों (साज़िश) से अचेत (ग़ाफ़िल) नहीं हूं, मैं भी उन के ख़िलाफ़ उपाय कर रहा हूं, या उनकी चालों का तोड़ कर रहा हूं, كَيْد छिपी साज़िश को कहते हैं जो बुरे उद्देश्य (मक़सद) के लिए हो तो बुरी है और मक़सद भला हो तो बुरा नहीं।

* **सूरतुल आला** : रसूल अल्लाह (ﷺ) यह सूरत और सूरतुल ग़ाशिया ईदैन एवं जुमआ में पढ़ते थे। इसी तरह वित्र की पहली रकअत में सूरतुल आला, दूसरी में अलकाफ़िरून और तीसरी मे सूरतुल इख़्लास पढ़ते थे। हज़रत मुआज़ को जिन सूरतों के पढ़ने का हुक्म दिया था उन में एक यह भी थी (सिहाह में यह सभी तफ़सील मौजूद हैं)

[2] यानी ऐसी चीज़ों से अल्लाह की पवित्रता (पाकीज़गी) जो उस के लायक़ नहीं है। हदीस में आता है कि नबी (ﷺ) इस के जवाब में पढ़ा करते थे। سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى (मुसनद अहमद, १\२३२ अबू दाऊद, किताबुस सलात, बाबुद दुआ फ़िस सलाते, अलबानी ने सहीह कहा है)

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ﴿7﴾

७. लेकिन जो कुछ अल्लाह चाहे वह खुले और छिपे को जानता है।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ﴿8﴾

८. हम आप के लिए आसानी पैदा कर देंगे।[1]

فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ﴿9﴾

९. तो आप शिक्षा (नसीहत) देते रहें अगर शिक्षा कुछ फ़ायेदा दे।

سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ﴿10﴾

१०. डरने वाला तो नसीहत हासिल कर लेगा।[2]

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿11﴾

११. (लेकिन) दुर्भाग्यपूर्ण (बद्नसीब) उस से दूर रह जायेगा।

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ﴿12﴾

१२. जो बड़ी आग में जायेगा।

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿13﴾

१३. जहाँ फिर न वह मर सकेगा न जियेगा[3] (वल्कि जान निकलने की हालत में पड़ा रहेगा)

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿14﴾

१४. वेशक उस ने कामयाबी प्राप्त (हासिल) कर ली, जो पाक हो गया।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿15﴾

१५. और जिस ने अपने रब का नाम याद रखा और नमाज पढ़ता रहा।

---

[1] यह भी मिसाल है, हम आप पर प्रकाशना (वह्यी) आसान कर देंगे ताकि उसे याद करना और उसके मुताबिक़ अमल करना आसान हो जाये, हम आप को वह रास्ता दिखायेंगे जो आसान होगा। हम जन्नत के काम आप के लिये आसान कर देंगे। हम आप के लिये ऐसे अमल और क़ौल आसान कर देंगे जिन में भलाई हो और हम आप के लिये ऐसी शरीअत मुक़र्रर करेंगे जो सरल-सीधी और मुनासिब होगी, जिस में कोई टेढ़ापन, उलझन और तंगी नहीं होगी।

[2] यानी आप की शिक्षा से वह ज़रूर नसीहत हासिल करेंगे, जिन के दिलों में अल्लाह का डर होगा, उन में अल्लाह के डर और अपने सुधार की ख़्वाहिश ज़्यादा शक्तिशाली हो जायेगी।

[3] इस के ख़िलाफ़ जो लोग सिर्फ़ अपने पापों की सज़ा भोगने के लिये सामायिक रूप (वक़्ती तौर) से नरक में रह गये होंगे उन्हें अल्लाह (तआला) ए५. तरह मौत दे देगा, यहाँ तक कि वह आग में जलकर कोयला हो जायेंगे, फिर अल्लाह अम्बिया वग़ैरह की सिफ़ारिश से उनको गरोहों के रूप में नरक से निकालेगा उनको जन्नत की नहर में डाला जायेगा, जन्नती भी उन पर पानी डालेंगे। जिस से वह इस तरह ज़िन्दा हो जायेंगे जैसे वाढ़ के कूड़े पर अन्न उग आता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान)

१६. लेकिन तुम तो सांसारिक जीवन को श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) देते हो।

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَوٰةَ الدُّنْيَا ﴿16﴾

१७. और परलोक (आख़िरत) बहुत बेहतर और स्थाई (दायमी) है।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿17﴾

१८. ये बातें पहले की किताबों में भी हैं।

اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿18﴾

१९. (यानी) इब्राहीम और मूसा की किताबों में।

صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿19﴾

सूरतुल ग़ाशिया-८८

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ

सूरतुल ग़ाशिया* मक्का में उतरी और इस में छब्बीस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क्या तुझे भी छिपा लेने वाली [(प्रलय) (क़ियामत)] की ख़बर पहुंची है।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿1﴾

२. उस दिन बहुत से मुंह ज़लील होंगे।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿2﴾

३. (और) दुखों से पीड़ित कष्टों में होंगे।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿3﴾

४. वे दहकती हुई आग में जायेंगे।

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿4﴾

५. और बहुत गर्म (उबलते हुए) स्रोत (चश्मे) का पानी उन को पिलाया जायेगा।[1]

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿5﴾

६. उन के लिए मात्र कांटेदार पेड़ों के अलावा कुछ खाना न होगा।[2]

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿6﴾

---

* सूरतुल ग़ाशिया : कुछ रिवायत में है कि रसूल अल्लाह (ﷺ) जुमआ की नमाज़ में सूरतुल जुमआ के साथ सूरतुल ग़ाशिया पढ़ते थे।

[1] यहां वह बहुत खौलता पानी अभिप्राय (मुराद) है जिसकी गर्मी चरम सीमा (इन्तिहा) को पहुंची हो। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह एक कांटेदार झाड़ी है जिस के सूखने पर जानवर उसे खाना पसन्द नहीं करते। जो भी हो यह भी ज़क्कूम की तरह एक बहुत कड़ुवा दुर्गंधित (बदबूदार), बेमज़ा अपवित्र (नापाक) खाना होगा जो न शरीर का हिस्सा बनेगा न भूक ही जायेगी।

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِن جُوعٍ ⑦

७. जो न शरीर में वृद्धि (इज़ाफ़ा) करेगा और न भूख मिटायेगा।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ⑧

८. बहुत से मुंह उस दिन ख़ुश और प्रफुल्लित (आसूदा) होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ⑨

९. अपने कर्मों (अमल) की वजह से ख़ुश होंगे।

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ⑩

१०. बुलन्द जन्नत में होंगे।

لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ⑪

११. जहां कोई अश्लील (लग्व) बात कान में न पड़ेगी।

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ⑫

१२. जहां (ठंडे) जल स्रोत (चश्में) बह रहे होंगे।

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ⑬

१३. (और) उस में ऊंचे-ऊंचे सिंहासन होंगे।

وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ⑭

१४. और प्याले रखे हुए (होंगे)।

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ⑮

१५. और एक पंक्ति में रखे हुए तकिये होंगे।

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ⑯

१६. और कोमल कालीनें बिछी होंगी।

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ⑰

१७. क्या ये ऊंटों को नहीं देखते कि वे किस तरह पैदा किये गये हैं।[1]

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ⑱

१८. और आकाशों को, कि किस तरह ऊंचा किया गया है।

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ⑲

१९. और पहाड़ों की तरफ़, कि किस तरह गाड़ दिये गये हैं।

[1] ऊंट अरब में साधारणत: (आम) थे और इन अरबों की ज़्यादातर सवारी यही थी, इसलिये अल्लाह ने उन्हीं की चर्चा कर के फ़रमाया कि इनकी रचना पर ख़्याल करो। अल्लाह ने उसे कितना बड़ा अस्तित्व (वजूद) दिया है और कितनी शक्ति और बल उस में रखा है इस के बावजूद भी वह तुम्हारे लिये नर्म और ताबे हैं, तुम उस पर जितना चाहो बोझ लादो वह इंकार नहीं करेगा, तुम्हारे ताबे होकर रहेगा, इस के सिवा इस का गोश्त तुम्हारे खाने के और उसका दूध तुम्हारे पीने के और उसका ऊन गर्मी हासिल करने के काम आता है।

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ (20)

२०. और धरती की तरफ, कि किस तरह बिछायी गयी है।

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ (21)

२१. तो आप नसीहत दे दिया करें (क्योंकि) आप केवल नसीहत देने वाले हैं।

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ (22)

२२. आप कुछ उन पर दारोगा तो नहीं है।

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ (23)

२३. लेकिन जो व्यक्ति (इंसान) मुंह फेरने वाला हो और कुफ्र करे।

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ (24)

२४. उसे अल्लाह (तआला) बड़ी कठोर यातना (अजाब) देगा।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ (25)

२५. बेशक हमारी तरफ उनको लौटाना है।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ (26)

२६. फिर बेशक उन से हिसाब लेना हमारा काम है।[1]

سُورَةُ الْفَجْرِ

सूरतुल फज्र-८९

सूरतुल फज्र मक्का में उतरी इसमें तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالْفَجْرِ (1)

१. क़सम है फज्र की।[2]

وَلَيَالٍ عَشْرٍ (2)

२. और दस रातों की।[3]

---

[1] मशहूर है कि इस के जवाब में اللّٰهُمَّ حَاسِبْنَا حِسَابًا يَسِيرًا पढ़ा जाये यह दुआ तो नबी (ﷺ) से सिद्ध (साबित) है जो आप अपनी कुछ नमाज़ों में पढ़ते थे जैसाकि सूरतुल इंशिक़ाक़ में गुजरा, लेकिन इस के जवाब में यह पढ़ना आप से सिद्ध नहीं है।

[2] **सूरतुल फज्र** : इस से मुराद साधारण (आम) फज्र है किसी ख़ास दिन की फज्र नहीं।

[3] इस से ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के विचार में "ज़िलहिज्जा" की शुरू की दस रातें मुराद हैं, जिनकी प्रधानता (फज़ीलत) हदीसों में साबित है। नबी (ﷺ) ने फ़रमाया "ज़िल हिज्जा" के दस दिनों में किये गये नेक काम अल्लाह को सब से ज़्यादा प्रिय है यहां तक की अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी इतना प्रिय नहीं सिवाय उस जिहाद के जिस में इंसान शहीद (बलिदान) ही हो जाये। (अल बुख़ारी, किताबुल ईदैन)

وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿3﴾

३. और सम और विषम (ताक़ और जोड़े) की।

وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ﴿4﴾

४. और रात की जब वह चलने लगे।

هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿5﴾

५. क्या उन में बुद्धिमानों (अक़्लमंद) के लिए काफी क़सम है?[1]

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿6﴾

६. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के रब ने आदियों के साथ क्या किया?

اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿7﴾

७. स्तम्भों (सुतूनों) वाले इरम के साथ।

الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿8﴾

८. जिन के जैसे लोग (दूसरे किसी नगर और) देशों में पैदा नहीं किये गये।

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿9﴾

९. और समूदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे।

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ﴿10﴾

१०. और फ़िरऔन के साथ जो खूँटों वाला था।[2]

الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿11﴾

११. उन सभी ने नगरों में सिर उठा रखा था।

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ﴿12﴾

१२. और बहुत उपद्रव (फ़साद) मचा रखा था।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿13﴾

१३. आख़िर में तेरे रब ने उन सब पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।

اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿14﴾

१४. बेशक तेरा रब घात में है।

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْۤ اَكْرَمَنِ ﴿15﴾

१५. इंसान (का यह हाल है) कि जब उसका रब उस की परीक्षा (इम्तेहान) लेता है और

---

[1] ذٰلِكَ से जिन चीज़ों की क़सम खाई गई है उनकी तरफ़ इशारा है, यानी क्या इनकी क़सम बुद्धिमानों के लिये काफी नहीं है? حِجْر का मतलब होता है रोकना मना करना, इंसानी बुद्धि (अक़्ल) भी उसे गलत कामों से रोकती है, इसलिये अक़्ल को भी حِجْر हिज्र कहा जाता है।

[2] इसका मतलब यह है कि भारी सेनाओं वाला था, जिस के पास खेमों की अधिकता थी जिन्हें खूँटे गाड़ कर खड़ा किया जाता था, या उसकी सख़्ती और ज़ुल्म की तरफ़ इशारा है कि खूँटों के ज़रिये (द्वारा) उन्हें यातनायें (अज़ाब) देता था। (फ़तहुल क़दीर)

मान और इज़्ज़त देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा सम्मान (इज़्ज़त) किया ।[1]

१६. और जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए उसकी जीविका (रोज़ी) को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा अपमान (बेइज़्ज़ती) किया ।[2]

وَأَمَّآ إِذَا مَا ٱبۡتَلَىٰهُ فَقَدَرَ عَلَيۡهِ رِزۡقَهُۥ فَيَقُولُ رَبِّيٓ أَهَٰنَنِ ﴿16﴾

१७. ऐसा कभी नहीं,[3] बल्कि (बात यह है कि) तुम (ही) लोग अनाथों (यतीमों) की इज़्ज़त नहीं करते ।[4]

كَلَّاۖ بَل لَّا تُكۡرِمُونَ ٱلۡيَتِيمَ ﴿17﴾

१८. और ग़रीबों को खिलाने की एक-दूसरे को प्रेरणा (तरग़ीब) नहीं देते ।

وَلَا تَحَٰٓضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلۡمِسۡكِينِ ﴿18﴾

१९. और (मृतकों का) उत्तराधिकार (मीरास) समेट-समेट कर खाते हो ।

وَتَأۡكُلُونَ ٱلتُّرَاثَ أَكۡلٗا لَّمّٗا ﴿19﴾

२०. और धन से जी भरकर प्रेम करते हो ।

وَتُحِبُّونَ ٱلۡمَالَ حُبّٗا جَمّٗا ﴿20﴾

२१. बेशक जिस समय धरती कूट-कूटकर बिल्कुल (समतल) बराबर कर दी जायेगी ।

كَلَّآۖ إِذَا دُكَّتِ ٱلۡأَرۡضُ دَكّٗا دَكّٗا ﴿21﴾

---

[1] यानी जब अल्लाह किसी को आजीविका (रिज़्क़) और धन-दौलत देता है तो वह अपने बारे में इस भ्रम (गुमान) में पड़ जाता है कि अल्लाह उस पर बड़ा मेहरबान है जबकि यह वसायल इम्तेहान और परख के लिये होता है ।

[2] यानी वह तंगी में डाल देता है और परीक्षा (इम्तेहान) लेता है तो अल्लाह के बारे में ग़लत संदेह (शक) करने लगता है ।

[3] यानी बात इस तरह नहीं है जैसे लोग समझते हैं । अल्लाह धन अपने प्यारे बन्दों को भी देता है और नापसंदीदा लोगों को भी, तंगी में भी अपनों और परायों दोनों को ग्रस्त (मुब्तिला) करता है, जब अल्लाह धन दे तो उसका शुक्र दिखाये, ग़रीबी आये तो सब्र करें ।

[4] यानी उस के साथ अच्छा सुलूक नहीं करते जिस के वह पात्र (मुस्तहक़) हैं । नबी (ﷺ) का क़ौल है वह घर सब से अच्छा है जिस में अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये तथा वह घर सबसे बुरा है जिस में अनाथ (यतीम) के साथ बुरा सुलूक किया जाये फिर अपनी उंगली की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया : मैं और अनाथ का पालने वाला जन्नत में इस तरह साथ-साथ होंगे, जैसे यह दो उंगलियां साथ मिली हैं । (अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाबुन फ़ी जम्मिल यतीमें)

२२. और तेरा रब (ख़ुद) आ जायेगा और फ़रिश्ते सफ़ें बांध कर आ जायेंगे।

وَجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿22﴾

२३. और जिस दिन नरक भी लाया जायेगा, उस दिन इंसान नसीहत हासिल करेगा, लेकिन आज नसीहत हासिल करने का फ़ायेदा कहाँ?

وَجِائْىٓءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿23﴾

२४. वह कहेगा कि काश, कि मैंने इस जीवन के लिए कुछ (नेकी के काम) पहले से कर रखे होते।

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿24﴾

२५. तो आज (अल्लाह) की यातनाओं जैसी यातना (अज़ाब) किसी की न होगी।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ أَحَدٌ ﴿25﴾

२६. न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा।[1]

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ أَحَدٌ ﴿26﴾

२७. ऐ सन्तावना (इत्मिनान) वाली आत्मा (रूह)।

يٰٓأَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿27﴾

२८. तू अपने रब की तरफ़ लौट चल, इस तरह कि तू उस से ख़ुश (प्रसन्न) वह तुझ से ख़ुश।

ارْجِعِيْٓ إِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿28﴾

२९. तो मेरे विशेष दासों (ग़ुलामों) में शामिल हो जा।

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿29﴾

३०. और मेरी जन्नत में चली जा।

وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿30﴾

---

[1] उस दिन सभी हक़ केवल एक अल्लाह के हाथ में होंगे दूसरे किसी को उस के आगे साँस लेने की हिम्मत न होगी, यहाँ तक कि उसकी आज्ञा (इजाज़त) के बिना कोई किसी की सिफ़ारिश भी नहीं कर सकेगा, ऐसी हालत में काफ़िरों को जो यातना (अज़ाब) होगी और जिस तरह वह अल्लाह के बन्धन में जकड़े होंगे उसे यहाँ सोचा भी नहीं जा सकता, यह तो अपराधियों और ज़ालिमों की हालत होगी, लेकिन ईमानवालों और नेक लोगों की हालत इस से बिल्कुल अलग होगी जैसाकि आगे की आयतों में है।

सूरतुल बलद-९०

سُوْرَةُ الْبَلَدِ

सूरतुल बलद मक्का में नाज़िल हुई और इस में बीस आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ أُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾

१. मैं इस नगर की क़सम खाता हूँ।[1]

وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

२. और आप इस नगर में मुक़ीम हैं।[2]

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾

३. और क़सम है मानवीय पिता और औलाद की।[3]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾

४. बेशक हम ने इंसान को (बहुत) परिश्रम (मुश्क़्क़त) में पैदा किया है।

أَيَحْسَبُ أَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ﴿٥﴾

५. क्या यह विचार करता है कि यह किसी के वश में ही नहीं?

يَقُوْلُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾

६. कहता (फिरता) है कि मैंने तो बहुत माल ख़र्च कर डाला।

---

[1] **सूरतुल बलद** : इस से मुराद मक्का नगर है जिसमें इस सूरत के अवतरण (नुज़ूल) के समय नबी (ﷺ) का निवास था, आप की पैदाईश की जगह भी यही नगर था, यानी अल्लाह आप की पैदाईश की जगह (जन्मभूमि) और रहने की जगह की क़सम ली है जिस से उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) का ज़्यादा स्पष्टीकरण (वजाहत) होता है।

[2] यह इशारा है उस वक़्त की तरफ़ जब मक्का विजय (फ़त्ह) हुआ, उस वक़्त इस पाक नगरी में अल्लाह ने लड़ाई को वैध (हलाल) कर दिया था जबकि उस में लड़ाई की इजाज़त नहीं, जैसे हदीस है नबी (ﷺ) ने कहा इस नगर को अल्लाह ने उस वक़्त से हुरमत वाला बनाया है जब से आकाश और धरती बनाई। फिर यह अल्लाह की ठहराई हुरमत की वजह से क़यामत तक हुरमत वाला है, न इसका पेड़ काटा जाये न उसके काँटे उखाड़े जायें, मेरे लिए इसे केवल एक पल के लिए हलाल किया गया था आज उसका आदर फिर उसी तरह लौट आया जैसे कल था ----- अगर यहाँ कोई लड़ाई के लिए दलील के तौर पर मेरी लड़ाई पेश करे तो उस से कहो कि अल्लाह के रसूल को इसकी अनुमति (इजाज़त) अल्लाह ने दी थी, जबकि उस ने तुम को यह इजाज़त नहीं दी। (सहीह अलबुख़ारी, किताबुल इल्म)

[3] कुछ ने इसका मतलब हज़रत आदम और उनकी औलाद लिया है और कुछ के ख़्याल से यह साधारण (आम) है हर बाप और औलाद इस में शामिल हैं।

أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ (7)

७. क्या (इस तरह) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं?

أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ (8)

८. क्या हम ने उसकी दो आंखें नहीं बनायीं?

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ (9)

९. और एक ज़ुबान और दो होंठ (नहीं बनाये)?

وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ (10)

१०. और उसको दोनों रास्ता दिखा दिये।

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ (11)

११. तो उस से न हो सका की घाटी में दाख़िल होता।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ (12)

१२. और तू क्या समझा कि घाटी है क्या?

فَكُّ رَقَبَةٍ (13)

१३. किसी गर्दन (दास-दासी) को आज़ाद करना।

أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ (14)

१४. या भूख वाले दिन खाना खिलाना।

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ (15)

१५. किसी क़रीबी यतीम को।

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ (16)

१६. या ज़मीन पर पड़े दरिद्र (मिस्कीन) को।

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ (17)

१७. फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाये[1] और एक-दूसरे को सब्र की और दया (रहम) करने की वसीयत करते हैं।[2]

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ (18)

१८. यही लोग हैं दायें हाथ वाले।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ (19)

१९. और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, वही लोग हैं बायें हाथ वाले।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ (20)

२०. उन्हीं पर आग होगी जो चारों तरफ़ से घेरे हुए होगी।

---

[1] इस से मालूम हुआ कि मज़कूरा अमल उसी वक़्त फ़ायदेमंद और परलौकिक सौभाग्य (उख़रवी सआदत) की वजह होंगे जब उनका करने वाला ईमान रखता होगा।

[2] ईमानवालों की ख़ासियत है कि वह एक-दूसरे को सब्र और दया की हिदायत देते है।

सूरतुश शम्स-९१

سُوْرَةُ الشَّمْسِ

सूरतुश शम्स मक्का में उतरी और इसमे पन्द्रह आयते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ﴿1﴾

१. क़सम है सूरज की और उसकी धूप की।[1]

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿2﴾

२. क़सम है चांद की जब उस के पीछे आये।

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ﴿3﴾

३. क़सम है दिन की जब सूरज को ज़ाहिर करे।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿4﴾

४. क़सम है रात की जब उसे ढांक ले।

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿5﴾

५. क़सम है आकाश की और उसके बनाने की।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ﴿6﴾

६. क़सम है धरती की और उसे बराबर करने की।

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ﴿7﴾

७. क़सम है आत्मा (रूह) की और उसका सुधार करने की।[2]

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ﴿8﴾

८. फिर समझ दी उस ने पाप की और उस से बचने की।[3]

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ﴿9﴾

९. जिसने उसे पाक किया वह सफल (कामयाब) हो गया।[4]

---

[1] या उस के प्रकाश (रौशनी) की या ضُحٰى से मुराद दिन है यानी सूरज और दिन की क़सम।

[2] या जिस ने उसे सुधारा, सुधारने का मतलब है उसके अंगों को संतुलित (मुनासिब) बनाया, बेढब और बेढंगा नहीं बनाया।

[3] اِلْهَام का मतलब यह है कि उन्हें अच्छी तरह समझा दिया और नबियों और आसमानी किताबों के ज़रिये भलाई-बुराई से परिचित (आगाह) करा दिया, यानी मतलब यह है कि उनकी प्रकृति (फ़ितरत) और समझ में भलाई-बुराई, नेकी और पाप का बोध (शउर) रख दिया ताकि वह नेकी को अपनायें और पाप से बचें।

[4] शिर्क से पाप से और अख़लाक़ी ख़राबी से पाक किया, वह आख़िरत की भलाई से और कामयाबी से अलंकृत (मुज़य्यन) होगा।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ⑩

१०. और जिस ने उसे मिट्टी में मिला दिया वह नाकाम हो गया।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰهَا ⑪

११. समूदियों ने अपनी उद्दण्डता (सरकशी) की वजह से झुठलाया।

إِذِ انْبَعَثَ أَشْقٰهَا ⑫

१२. जब उनमें का बड़ा दुर्भाग्यशाली (बदबख़्त) उठ खड़ा हुआ।[1]

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ⑬

१३. उन्हें अल्लाह के रसूल ने कह दिया था कि अल्लाह (तआला) की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की (सुरक्षा करो)।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ⑭

१४. उन लोगों ने अपने रसूलों को झूठा समझ कर उस ऊँटनी को मार डाला[2] तो उन के रब ने उन के पाप की वजह से उन पर विनाश (हलाकत) डाल दिया और फिर विनाश को आम लोगों के लिए कर दिया और उस बस्ती को बराबर कर दिया।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ⑮

१५. वह इस प्रकोप (अज़ाब) के नतीजा से बेख़ौफ़ है।

سُوْرَةُ اللَّيْلِ

सूरतुल लैल-९२

सूरतुल लैल मक्का में उतरी और इस में इक्कीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

[1] जिस का नाम व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने केदार बिन सालिफ़ बताया है उस ने ऐसा बुरा काम किया कि हतभागों (बदबख़्तों) का सरदार बन गया, सब से बड़ा बदबख़्त।

[2] यह बुरा काम एक ही इंसान केदार ने किया था, लेकिन उस के बुरा काम में पूरी क़ौम भी उस के साथ थी इसलिए इन सबको बराबर का दोषी माना गया और झुठलाने और ऊँटनी के मारने को पूरी क़ौम से सम्बन्धित (मुताल्लिक़) किया गया, जिस से यह नियम मालूम हुआ कि एक बुरा काम अगर कोई बुरा इंसान करें लेकिन पूरी क़ौम उस बुरे काम का इंकार न करे बल्कि उसे अच्छा समझे तो पूरी क़ौम इस बुरे काम की दोषी मानी जायेगी और इस गुनाह या बुरे काम में बराबर की साझीदार समझी जायेगी।

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ⁽¹⁾

१. क़सम है रात की जब छा जाये।

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ⁽²⁾

२. और क़सम है दिन की जब रौशन हो जाये।

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ⁽³⁾

३. और क़सम है उस (ताक़त) की जिस ने नर-मादा को पैदा किया।

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ⁽⁴⁾

४. बेशक तुम्हारा प्रयत्न (कोशिश) कई तरह का है।

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ⁽⁵⁾

५. तो जो इंसान देता रहा और डरता रहा।

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ⁽⁶⁾

६. और अच्छी बातों की पुष्टि (तसदीक़) करता रहा।

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ⁽⁷⁾

७. तो हम भी उस के लिये आसानी पैदा कर देंगे।[1]

وَأَمَّا مَن بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ⁽⁸⁾

८. लेकिन जिसने कंजूसी की और निश्चिन्तता (बेनियाज़ी) ज़ाहिर किया।

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ⁽⁹⁾

९. और अच्छी बातों को झुठलाया।

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ⁽¹⁰⁾

१०. तो हम भी उस पर तंगी और कठिनाई का साधन उपलब्ध (मुहय्या) करा देंगे।[2]

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ⁽¹¹⁾

११. और उसका माल उस के (मुँह के बल) गिरते समय कोई काम न आयेगा।

---

[1] يُسْرَىٰ का मतलब नेकी और الْخَصْلَةُ الْحُسْنَىٰ है, यानी हम नेकी और आज्ञापालन (पैरवी) की उसे योग्यता (सलाहियत) देते और उन को उस के लिये सहज कर देते हैं। व्याख्याकार (मुफ़स्सिरीन) कहते हैं कि यह आयत हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ के बारे में उतरी है जिन्होंने छः गुलाम आज़ाद किये, जिन्हें मुसलमान होने के वजह से मक्का के लोग कड़ी सज़ायें देते थे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] عُسْرَىٰ (तंगी) से मतलब कुफ़्र, नाफ़रमानी (अवज्ञा) और दुराचार है, यानी हम उस के लिये नाफ़रमानी का रास्ता आसान कर देंगे, जिस से उस के लिये भलाई और सौभाग्य (सआदत) के रास्ते कठिन हो जायेंगे।

१२. बेशक रास्ता दिखा देना हमारा दायित्व (फ़र्ज़) है।	إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ﴿12﴾
१३. और हमारे ही हाथ परलोक (आख़िरत) और यह लोक (दुनिया) है।	وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ﴿13﴾
१४. मैंने तो तुम्हें शोले मारती आग से डरा दिया है।	فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ﴿14﴾
१५. जिस में केवल वह वदनसीव ही प्रवेश (दाख़िल) करेगा।	لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ﴿15﴾
१६. जिस ने झुठलाया और (उस की पैरवी से) मुख फेर लिया।	الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿16﴾
१७. और उस से ऐसा इंसान दूर रखा जायेगा जो सदाचारी (परहेज़गार) होगा।	وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ﴿17﴾
१८. जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता है।[1]	الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ﴿18﴾
१९. किसी का उस पर कोई उपकार (एहसान) नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।	وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ﴿19﴾
२०. बल्कि केवल अपने बुलन्द रब की ख़ुशी हासिल करना होता है।	إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ﴿20﴾
२१. बेशक वह (अल्लाह भी) जल्द ही ख़ुश हो जायेगा।[2]	وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿21﴾

[1] यानी जो अपना धन अल्लाह की आज्ञानुसार ख़र्च करेगा ताकि उसका मन और धन पाक हो जाये।

[2] या वह ख़ुश हो जायेगा, यानी जो इन ख़ुसूसियत से युक्त (मुज़य्यन) होगा। अल्लाह (तआला) उसे जन्नत की अनुकम्पायें (नेमतें) और इज़्ज़त अता करेगा जिस से वह ख़ुश हो जायेगा। ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने कहा है बल्कि कुछ ने पूरी तरह से सहमति (मर्जी) तक नक़ल किया है कि यह आयतें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की शान में उतरी हैं फिर भी मतलब और मायने के विना पर साधारण (आम) है, जो भी इन ऊँची सिफ़ात से मुज़य्यन होगा वह अल्लाह के दरबार में इसका मुस्तहिक़ होगा।

سُوْرَةُ الضُّحٰى

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ﴿1﴾

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿2﴾

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿3﴾

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿4﴾

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿5﴾

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿6﴾

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ﴿7﴾

सूरतुददुहा-९३

सूरतुददुहा* मक्का में उतरी और इस में ग्यारह आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. क़सम है चाश्त (सूरज के ऊंचे हो जाने) के समय की।[1]

२. और क़सम है रात की जब छा जाये।

३. न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा है, न वेज़ार हो गया है।

४. बेशक तेरे लिए आख़िर शुरु से अच्छा है।

५. तुझे तेरा रब जल्द ही (पुरस्कार) देगा और तू ख़ुश हो जायेगा।[2]

६. क्या उसने तुझे अनाथ (यतीम) पाकर जगह नहीं दिया?

७. और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?[3]

---

* **सूरतुददुहा :** एक बार नबी (ﷺ) बीमार हो गये दो-तीन रातें आप ने तहज्जुद की नमाज नहीं पढ़ी। एक औरत आप के पास आई और कहने लगी, हे मोहम्मद (ﷺ) लगता है तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया है, दो-तीन रातों से देख रही हूं कि वह तेरे पास नहीं आया। जिस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह अल-बुख़ारी, तफ़सीर वददुहा) यह औरत अबूलहब की पत्नी उम्मे जमील थी। (फ़तहुल बारी)

[1] चाश्त (दुहा) उस वक़्त को कहते हैं जब सूरज ऊंचा होता है, यहां मतलब पूरा दिन है।

[2] इस से सांसारिक विजय (फ़त्ह) और परलोक (आख़िरत) की कामयाबी मुराद है, इस में वह सिफ़ारिश का हक़ भी शामिल है जो आप को अपने समूह के पापियों के लिये मिलेगा।

[3] यानी तुझे दीन, शरीअत और ईमान का पता नहीं था, हम ने तुझे हिदायत दी, नबूअत दिया और किताब उतारा, नहीं तो तू इससे पहले तो हिदायत के लिये कोशिश कर रहा था।

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنَىٰ ﴿8﴾

८. और तुझे गरीब पाकर अमीर नहीं बना दिया?

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿9﴾

९. तो अनाथ (यतीम) पर तू भी कठोरता न किया कर।

وَأَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿10﴾

१०. और माँगने वाले को न डांट-डपट।

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿11﴾

११. और अपने रब के उपकारों (नेमतों) का बयान करता रह।[1]

سُورَةُ الشَّرْحِ

सूरतु शरह-९४

सूर: शरह मक्का में उतरी इस में आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿1﴾

१. क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया।

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ﴿2﴾

२. और तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।[2]

---

[1] यानी अल्लाह ने तुझ पर जो एहसान किये हैं, जैसे हिदायत, रिसालत और नबूअत से सम्मानित (बाइज़्ज़त) किया, अनाथ होने के बावजूद तेरे पालन-पोषण और निगरानी की व्यवस्था (तदबीर) की, तुझे सब्र और माल दिया, उन्हें शुक्रिया और एहसान की भावना के साथ बयान कर। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह की अनुकम्पाओं (नेमतों) की चर्चा और उनका इज़्हार अल्लाह को प्यारा है, लेकिन घमन्ड और फ़ख़ के तौर पर नहीं बल्कि अल्लाह की दयालुता और अनुग्रह (नेमत) का एहसानमंद होते हुए उसकी ताक़त और क़ुदरत से डरते हुए कि वह कहीं हम को इन नेमतों से वंचित (महरूम) न कर दे।

[2] यह बोझ चालीस साल नुबूअत से पहले का बोझ है, उस ज़माने में आप को अगर अल्लाह ने पापों से सुरक्षित (महफ़ूज़) रखा, किसी मूर्ति को आप ने सज्दा नहीं किया कभी मदिरा पान नहीं किया और दूसरे पापों से भी अलग रहे, फिर भी अल्लाह की इबादत न आप जानते थे न की, इसलिये इस चालीस साल इबादत और आज्ञापालन (इताअत) न करने का बोझ आप पर था जो हक़ीक़त में तो नहीं था लेकिन आप के एहसास और शउर ने उसे बोझ बना रखा था। अल्लाह ने उसे उतार देने का एलान करके आप पर एहसान किया।

الَّذِيْ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ③

३. जिस ने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ④

४. और हम ने तेरा चर्चा बुलन्द कर दिया।[1]

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑤

५. तो बेशक कठिनाई के साथ आसानी है।

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑥

६. बेशक कठिनाई के साथ आसानी है।

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ⑦

७. तो जब तू ख़ाली हो तो (इबादत में) मेहनत कर।

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ⑧

८. और अपने रब की तरफ़ दिल लगा।

सूरतुत्तीन-९५

سُوْرَةُ التِّيْنِ

सूरतुत्तीन मक्का में उतरी और इस में आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ①

१. क़सम है इंजीर की और ज़ैतून की।

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ②

२. और सनायी के तूर (पर्वत) की।

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ③

३. और इस शान्ति (अमन) वाले नगर की।[2]

---

[1] यानी जहाँ अल्लाह का नाम आता है, जैसे नमाज़, अज़ान और दूसरे बहुत सी जगहों पर आप का नाम भी आता है, पुरानी किताबों में आप की चर्चा और सिफ़्तों का बयान है। फ़रिश्तों में आप की शुभ चर्चा है, आप के आज्ञापालन (इताअत) को अल्लाह ने अपना आज्ञापालन कहा है और अपनी इताअत के साथ आप की इताअत का भी हुक्म दिया है, इत्यादि।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) पाक नगर मक्का है जिस में लड़ाई अवैध (हराम) है, इस के सिवा जो इस में दाख़िल हो जाये उसको शान्ति मिल जाती है। कुछ व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) का कहना है कि हक़ीक़त में तीन जगहों की क़सम है, जिन में से हर एक में महान (बड़ा) पैग़म्बर भेजे गये। इंजीर और ज़ैतून से मुराद वह इलाक़ा है जहाँ इसकी उपज है और वह बैतुल मोक़द्दस है जहाँ हज़रत ईसा पैग़म्बर (ईश्दूत) बनकर आये। सिना पहाड़ या सीनीन पर हज़रत मूसा को नुबूअत (दूतत्व) प्रदान की गई और मक्का में पैग़म्बरों के सरदार हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह (ﷺ) को भेजा गया। (इब्ने कसीर)

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ﴿4﴾

४. वेशक हम ने इंसान को बहुत अच्छे रूप में पैदा किया।

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ﴿5﴾

५. फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया।[1]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿6﴾

६. लेकिन जो लोग ईमान लाये और फिर नेकी के काम किये, तो उन के लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ﴿7﴾

७. तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी बात उत्साहित (आमादा) करती है।[2]

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ﴿8﴾

८. क्या अल्लाह (तआला) सभी हाकिमों का हाकिम नहीं है?

سُورَةُ الْعَلَقِ

सूरतुल अलक़-९६

सूरतुल अलक़* मक्का में उतरी और इस में उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿1﴾

१. अपने रब का नाम लेकर पढ़ जिस ने पैदा किया।

---

[1] यह इशारा इंसान की ख़ूसट उम्र (बहुत ज़्यादा उम्र की तरफ़) जिस में जवानी और यौवन के बाद बुढ़ापा और कमजोरी आ जाती है और इंसान की समझ बच्चे की तरह हो जाती है।

[2] यह इंसान से ख़िताब है फटकार के लिए कि अल्लाह ने तुझे अच्छे रूप में बनाया और इसके ख़िलाफ़ वह तुझे अपमान के गड्हे में भी गिरा सकता है इसका मतलब है कि दोबारा जीवन देना कठिन नहीं इस के बाद भी तू क़यामत और बदले का इंकार करता है।

* **सूरतुल अलक़** : यह सब से पहली प्रकाशना (वह्यी) है जो नबी (ﷺ) पर उस समय आई जब आप हिरा पर्वत की गुफा में उपासना (इबादत) में लीन (मशग़ूल) थे। फ़रिश्ते ने आकर कहा पढ़, आप ने फ़रमाया : मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूं, फ़रिश्ते ने आप को ज़ोर से भींचा और कहा पढ़, आप ने फिर वही जवाब दिया, इस तरह तीन बार आप को भींचा (तफ़सील के लिये देखिए सहीह अलबुख़ारी, बाब बदउल वह्यी-मुस्लिम अलईमान बाबु बदइल वह्यी) اقرأ जो तेरी तरफ़ वह्यी की जाती है वह पढ़ خلق जिस ने सारी दुनिया को बनाया।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿2﴾

२. जिस ने इंसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ﴿3﴾

३. तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला है।

الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿4﴾

४. जिस ने क़लम के द्वारा (ज्ञान) सिखाया।

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿5﴾

५. जिस ने इंसान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ﴿6﴾

६. हक़ीक़त में इंसान तो आपे से बाहर हो जाता है।

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ﴿7﴾

७. इसलिए कि वह अपने आप को बेफ़िक्र (या धनवान) समझता है।

اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ﴿8﴾

८. बेशक लौटना तेरे रब की तरफ़ है।

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يَنْهٰى ﴿9﴾

९. (भला) उसे भी तूने देखा जो (एक बन्दे को) रोकता है।

عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ﴿10﴾

१०. जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है।

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰىٓ ﴿11﴾

११. भला बताओ तो अगर वह सीधे रास्ते पर हो।

اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿12﴾

१२. या परहेज़गारी का अनुदेश (हुक्म) देता हो।[1]

اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿13﴾

१३. भला देखो तो अगर यह झुठलाता हो और मुँह फेरता हो तो।

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿14﴾

१४. क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे अच्छी तरह देख रहा है।

---

[1] यानी ख़ालिस, तौहीद (एकेश्वरवाद) और नेकी के कामों की शिक्षा, जो नरक की आग से इंसान को बचा सकती है, तो क्या यह चीज़े [नमाज़ पढ़ना और संयम (तक़वा) की शिक्षा (नसीहत देना)] ऐसी बातें हैं कि उनका विरोध (मुख़ालफ़त) किया जाये और उस पर उसे धमकियाँ दी जायें?

१५. बेशक अगर ये नहीं रूका तो हम उस की पेशानी (ललाट) के बाल पकड़कर घसीटेंगे।

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ⑮

१६. ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है।[1]

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ⑯

१७. वह अपने सभा वालों को बुला ले।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ⑰

१८. हम भी नरक के रक्षकों (निगराँ) को बुला लेंगे।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ⑱

१९. सावधान! उसका कहना कभी न मानना और सज्दा करो और क़रीब हो जाओ।

كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ⑲ السجدة

सूरतुल क़द्र-९७

سُوْرَةُ الْقَدْرِ

सूरतुल क़द्र* मक्का में उतरी और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. बेशक हम ने उसे क़द्र (बरकत) की रात में नाज़िल किया।[2]

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ①

२. तू क्या समझा कि क़द्र (बरकत) की रात क्या है?

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ②

---

[1] पेशानी के इस गुण (सिफ़त) का मतलब है कि वह झूठी है अपनी बात में, पापी है अपने काम में।

* **सूरतुल क़द्र** : इसे सूरत के मक्की और मदनी होनें में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, इसका नाम रखने के कारण में इख़्तिलाफ़ है, क़द्र के मायने एहतेराम के भी है, इसी वजह से क़द्र की रात कहते है, इसका अर्थ (मायेना) अंदाज़ा लगाना और फ़ैसला करना भी है, इस में पूरे साल का फ़ैसला किया जाता है, इसीलिये इसे لَيْلَةُ الْحُكْم भी कहते हैं।

[2] यानी उतारना शुरू किया और लौहे महफ़ूज़ से बैतुल इज़्ज़त में जो पहले आकाश पर है उतारा, और वहाँ से ज़रूरत के मुताबिक़ नबी (ﷺ) पर उतारता रहा। यहाँ तक कि लगभग २३ साल में पूरा हो गया और लैलतुल क़द्र रमज़ान ही में होती है। जैसाकि क़ुरआन की आयत (شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ أُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْآنُ) से साफ़ है।

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ③

३. क़द्र की रात एक हजार महीनों से बेहतर हैं।

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ④

४. इस में (हर काम को पूरा करने के लिये) अपने रब के हुक्म से फ़रिश्ते और रूह (जिब्रील) उतरते हैं।[1]

سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ⑤

५. यह रात साक्षात् (सरासर) शान्ति की होती है, और फ़ज्र के निकलने तक (होती है)।

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ

सूरतुल बय्यिनः-९८

सूरतुल बय्यिनः* मदीनें में नाज़िल हुई और इस मे आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ①

१. अहले किताब के काफ़िर और मूर्तिपूजक लोग, जब तक कि उन के पास स्पष्ट (वाजेह) निशानी न आ जाये रूकने वाले न थे (वह निशानी यह थी कि)

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ②

२. अल्लाह (तआला) का एक रसूल जो पाक किताब पढ़े।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ③

३. जिस में ठीक और सही अहकाम हों।[2]

[1] रूह से अभिप्राय (मुराद) हज़रत जिब्रील हैं, यानी फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील सहित इस रात धरती पर उतरते हैं और उन कामों को पूरा करते हैं जिनका फ़ैसला इस साल में अल्लाह (तआला) फ़रमाता है।

* **सूरतुल बय्यिनः** इसका दूसरा नाम सूरत لَمْ يَكُنْ है। हदीस में है, नबी (ﷺ) ने हज़रत उबय्य बिन काब से फ़रमाया : अल्लाह ने मुझे आज्ञा दी है कि, मैं सूरत (لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا) तुझे पढ़ कर सुनाऊं। हज़रत उबय्य ने पूछा, क्या अल्लाह ने आप के सामने मेरा नाम लिया है, आप ने फ़रमाया हाँ, जिस पर (बहुत खुशी से) उबय्य की आँखों में आँसू आ गये। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरत लम यकुन)

[2] यहाँ كُتُبٌ किताबों से मुराद शरीअत और قَيِّمَةٌ संतुलित (मोतदिल) और सीधे।

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿4﴾

४. अहले किताब अपने पास साफ़ निशानी आ जाने के बाद ही मतभेद (इख़्तिलाफ़) में पड़कर) बंट गये।

وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوا۟ اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا۟ الصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُوا۟ الزَّكَوٰةَ وَذَٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ﴿5﴾

५. उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध (ख़ालिस) कर रखें। (इब्राहीम) एकेश्वरवादी[1] के धर्म पर, और नमाज़ को क़ायम रखें और ज़कात देते रहें, यही धर्म सीधी मिल्लत का है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ وَالْمُشْرِكِينَ فِى نَارِ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿6﴾

६. बेशक जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हुए और मूर्तिपूजक, वे नरक की आग (में जायेंगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, ये लोग बहुत बुरी मख़लूक़ हैं।

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ الصَّٰلِحَٰتِ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿7﴾

७. बेशक जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये, ये लोग बेहतरीन मख़लूक़ हैं।

جَزَآؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا رَّضِىَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهُۥ ﴿8﴾

८. उनका बदला उन के रब के पास हमेशा रहने वाले स्वर्ग हैं जिन के नीचे (ठंडे पानी की) नहरें बह रही हैं जिन में वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह (तआला) उन से ख़ुश हुआ और ये उस से। ये है उसके लिये जो अपने रब से डरे।[2]

[1] حنيف का मतलब है झुकना, एकाग्र (यकसू) होना, حنفاء बहुवचन (जमा) है यानी बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की तरफ़ और सभी मतों से कटकर इस्लाम धर्म की तरफ़ झुकते और यकसू होते हुए, जैसे हज़रत इब्राहीम ने किया।

[2] यानी यह बदला और ख़ुशहाली उन लोगों के लिये है जो दुनिया में अल्लाह से डरते रहते हैं और इस डर की वजह से अल्लाह की अवज्ञा (नाफ़रमानी) से बचते हैं। अगर किसी समय इंसानी तक़ाज़ा की वजह से अल्लाह की नाफ़रमानी हो गई तो तुरन्त क्षमायाचना (तौबा) कर ली और भविष्य (मुस्तक़बिल) के लिये अपना सुधार कर लिया यहाँ तक कि उनकी मौत इसी आज्ञापालन (इताअत) पर हुई न कि नाफ़रमानी पर। इसका मतलब यह है कि जो अल्लाह का डर रखता है वह नाफ़रमानी पर दुराग्रह (इसरार) नहीं करता न उस पर बाक़ी रहता और जो ऐसा नहीं करता है हक़ीक़त में उसका दिल अल्लाह के डर से ख़ाली है।

सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल-९९

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ

सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल* मदीने में नाज़िल हुई और इस में आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. जब धरती पूरी तरह से झिंझोड़ दी जायेगी।[1]

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا (1)

२. और अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।[2]

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا (2)

३. और इंसान कहने लगेगा कि उसे क्या हो गया?

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا (3)

४. उस दिन धरती अपनी सभी सूचनायें (ख़बरें) बयान कर देगी।[3]

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا (4)

५. इसलिए कि तेरे रब ने उसे हुक्म दिया होगा।

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا (5)

६. उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ जमाअतों (समूहों) में होकर लौटेंगे ताकि उन्हें उनके कर्म (अमल) दिखा दिये जायें।

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ (6)

---

* **सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल** : इस के मक्की और मदनी होनें में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, इसकी प्रधानता (फ़ज़ीलत) में अनेकों रिवायतें हैं, लेकिन उन में से कोई भी सही नहीं है।

[1] इसका मतलब यह है कि सख़्त भूंचाल (ज़लज़ला) से पूरी धरती कांप जायेगी और हर चीज़ टूट-फूट जायेगी, यह समय होगा जब पहला नफ़ख़ा (फूंक) होगा।

[2] यानी धरती में जितने इंसान गड़े हुए हैं वह धरती का बोझ हैं, जिन्हें धरती क़यामत के दिन निकाल फेंकेगी, यानी अल्लाह के हुक्म से सब जिन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे यह दूसरे नफ़ख़े (फूंक) में होगा। इस तरह धरती के ख़ज़ाने भी बाहर निकल आयेंगे।

[3] यह शर्त का जवाब है। हदीस में है कि नबी (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी और सवाल किया, जानते हो धरती की सूचनाऐं क्या हैं? सहाबा ने जवाब दिया अल्लाह और उस के रसूल अच्छी तरह जानते हैं। आप ने फ़रमाया : उसकी सूचनायें यह हैं कि जिस बन्दे या बन्दी ने धरती के ऊपर जो कुछ किया होगा उसकी गवाही देगी कहेगी अमुक-अमुक (फ़लां-फ़लां) इंसान ने अमुक-अमुक काम अमुक-अमुक दिन किया था। (तिर्मिज़ी, अबवाबु सिफ़ातिल क़ियामः और तफ़सीर इज़ा ज़ुलज़िलत, मुसनद अहमद २\३७४)

فَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرٗا يَرَهُۥ ⑦

७. तो जिस ने कण (ज़र्रे) के बराबर भी पुण्य (नेकी) किया होगा वह उसे देख लेगा।

وَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ شَرّٗا يَرَهُۥ ⑧

८. और जिस ने कण (ज़र्रे) के बराबर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।

सूरतुल आदियात-१००

سُورَةُ العَادِيَاتِ

सूरतुल आदियात मक्का में नाज़िल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَٱلۡعَٰدِيَٰتِ ضَبۡحٗا ①

१. हांपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम ![1]

فَٱلۡمُورِيَٰتِ قَدۡحٗا ②

२. फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की क़सम।

فَٱلۡمُغِيرَٰتِ صُبۡحٗا ③

३. फिर सुबह (प्रातःकाल) में धावा बोलने वालों की क़सम।

فَأَثَرۡنَ بِهِۦ نَقۡعٗا ④

४. तो उस समय धूल उड़ाते हैं।

فَوَسَطۡنَ بِهِۦ جَمۡعًا ⑤

५. फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच घुस जाते हैं।

إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٞ ⑥

६. बेशक इंसान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा (कृतघ्न) है।

وَإِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٞ ⑦

७. और यक़ीनी तौर से वह ख़ुद भी उस पर गवाह है।

وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ ٱلۡخَيۡرِ لَشَدِيدٌ ⑧

८. और ये माल के प्रेम में भी बड़ा कठोर (सख़्त) है।

---

[1] **सूरतुल आदियात** : عَادِيَاتٌ यह عَادِيَةٌ का बहुवचन (जमा) है, यह عَدْوٌ से है जैसे غَزْوٌ है غَازِيَاتٌ की तरह उस के "वाव" को भी या से बदल दिया गया।

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ⑨

९. क्या उसे वह समय मालूम नहीं, जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल दिये जायेंगे।

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ⑩

१०. और सीनों में छिपी बातों को जाहिर कर दिया जायेगा।

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ⑪

११. बेशक उन का रब उस दिन उन के हाल से पूरी तरह से परिचित (वाक़िफ़) होगा।

सूरतुल क़ारिअ:-१०१

سُورَةُ الْقَارِعَةِ

सूरतुल क़ारिअ: मक्का में नाज़िल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الْقَارِعَةُ ①

१. खड़खड़ा देने वाली?[1]

مَا الْقَارِعَةُ ②

२. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ③

३. तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ④

४. जिस दिन इंसान बिखरे हुए पतिंगों की तरह हो जायेंगे।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ ⑤

५. और पहाड़ धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।[2]

---

[1] **सूरतुल क़ारिअ:** : यह भी क़यामत के नामों में से एक नाम है जैसे इस से पहले इस के कई नाम गुज़र चुके हैं, जैसे الحَاقَّة अलहाक्क़:, الطَّامَّة अत्ताम्म:, الصَّاخَّة अस्साख़्ख़:, الغَاشِيَة अलग़ाशिय:, السَّاعَة अस्साअ:, الوَاقِعَة अलवाक़िअ: आदि (वग़ैरह)। अलक़ारिअ: इसे इसलिये कहते हैं कि यह अपनी भयानकता की वजह से दिलों को डराने और अल्लाह के दुश्मनों को अज़ाब से ख़बर करेगी जैसे दरवाज़ा खटखटाने वाला करता है।

[2] عِهْن उस ऊन को कहते है जो कई रंगों के रंगे हुये हों مَنفُوش धुने हुए। यह पर्वतों की हालत बताई गई है जो क़यामत के दिन उनकी होगी।

فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ⑥
६. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे ।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ⑦
७. वह तो बड़े सुखदायी जीवन में होगा ।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ⑧
८. और जिस के पलड़े हल्के होंगे ।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ⑨
९. उसका ठिकाना 'हाविया' है ।[1]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ⑩
१०. तुझे क्या पता कि वह क्या है ।

نَارٌ حَامِيَةٌ ⑪
११. वह बहुत तेज भड़कती हुई आग है ।[2]

सूरतुत तकासुर-१०२

سُورَةُ التَّكَاثُر

सूरतुत तकासुर मक्का में नाजिल हुई और इस में आठ आयतें हैं ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ①
१. अधिकता (ज़्यादती) के प्रेम ने तुम्हें अचेत (ग़ाफ़िल) कर दिया ।

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ②
२. यहां तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे ।[3]

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ③
३. कभी नही तुम जल्द ही मालूम कर लोगे ।

---

[1] هَاوِيَة नरक का नाम है, उस को हाविया इस वजह से कहते हैं कि नरकीय उसकी गहराई में गिरेगा और उसे أُمّ (मां) से इसलिये व्यंजित (ताबीर) किया गया कि जिस तरह मां बच्चों के लिए पनाह की जगह होती है इसी तरह नरकियों के पनाह की जगह नरक होगी । कुछ कहते हैं कि أُمّ मायने दिमाग होता है, नरकीय नरक में सिर के बल डाले जायेंगे । (इब्ने कसीर)

[2] जैसे हदीस में है कि इंसान दुनिया में जो आग जलाता है यह नरक की आग का सत्तरवां हिस्सा है, नरक की आग दुनियां की आग से उनहत्तर गुना ज़्यादा है । (सहीह अलबुख़ारी)

[3] इस का मतलब यह है ज़्यादा पाने के लिए मेहनत करते-करते तुम्हें मौत आ गई और तुम समाधि स्थलों (कब्रों) में जा पहुँचे ।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿4﴾

४. फिर कभी नहीं तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ﴿5﴾

५. कभी नहीं अगर तुम यक़ीनी तौर से जान लो।

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ﴿6﴾

६. तो बेशक तुम नरक देख लोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ﴿7﴾

७. तो तुम उसे यक़ीन की आँख से देख लोगे।

ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ﴿8﴾

८. फिर उस दिन तुम से ज़रूर-ज़रूर उपहारों (नेमतों) का सवाल होगा।[1]

सूरतुल अस्र-१०३

سُورَةُ الْعَصْرِ

सूरतुल अस्र मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالْعَصْرِ ﴿1﴾

१. ज़माने की क़सम।[2]

[1] यह सवाल उन नेमतों (अनुकम्पाओं) के बारे में होगा जो अल्लाह ने दुनियाँ में दी है, जैसे आँख, कान, दिल, शान्ति, सेहत, धन, दौलत और संतान (औलाद) आदि कुछ कहते हैं कि सवाल केवल काफ़िरों से होगा। कुछ कहते हैं कि हर एक ही से होगा क्योंकि केवल सवाल ही अज़ाब की वजह नहीं होगा, जिन्होंने नेमतों का इस्तेमाल अल्लाह के हुक्म के आधीन (ताबे) रहकर किया होगा वह सवाल के बावजूद भी यातना (अज़ाब) से महफ़ूज़ रहेंगे और जिन्होंने नाशुक्री की होगी वह धर लिये जायेंगे।

[2] **सूरतुल अस्र :** युग (ज़माने) से मुराद रात-दिन का यह चक्कर है और उनका अदल-बदल कर आना, रात आती है तो अंधेरा हो जाता है और दिन से हर चीज़ प्रकाशित (रौशन) हो जाती है, इस के सिवा कभी रात लम्बी और दिन छोटा और रात लम्बी हो जाती है अगर दिनों का यही चक्कर ज़माना है जो अल्लाह की पूरी ताक़त और क़ुदरत का इशारा देता है इसलिए पालनहार ने उसकी क़सम ली है। यह पहले बतलाया जा चुका है कि अल्लाह तो अपनी सृष्टि (मख़लूक़) में से जिसकी चाहे क़सम खा सकता है लेकिन इंसान के लिये अल्लाह के सिवाय किसी की क़सम खाना वैध (जायेज़) नहीं है।

إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿2﴾

२. वास्तव (हक़ीक़त) में सारे इंसान सरासर घाटे में है।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿3﴾

३. उन के सिवाय जो ईमान लाये और नेक काम किये और (जिन्होंने) आपस में सच की वसीयत की और एक-दूसरे को धैर्य (सब्र) करने की नसीहत की।

सूरतुल हुमज़ः-१०४

سُورَةُ الْهُمَزَةِ

सूरतुल हुमज़: मक्का में नाज़िल हुई और इस में नौ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَيْلٌ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُمَزَةٍ ﴿1﴾

१. बड़ी ख़राबी है उस इंसान की जो त्रुटियाँ (ऐब) टटोलने वाला चुगली करने वाला हो।[1]

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ﴿2﴾

२. जो माल को जमा करता जाये और गिनता जाये।[2]

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ﴿3﴾

३. वह समझे कि उस का माल उस के पास हमेशा रहेगा।

كَلَّا لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ﴿4﴾

४. हरगिज़ नहीं यह तो ज़रूर तोड़-फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जायेगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ﴿5﴾

५. और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?

---

[1] **सूरतुल हुमज़:** هُمَزَة और لُمَزَة कुछ के ख़्याल में पर्यायवाची (मुतरादिफ़) हैं, कुछ उस में कुछ फ़र्क करते हैं। हुमज़ा वह इंसान जो सामने बुराई करे और लुमज़ा जो पीठ-पीछे बुराई करे। कुछ इस से उल्टा मायने करते हैं, कुछ कहते हैं हम्ज़ आँखों और हाथों के इशारे से बुराई करना और लम्ज़ ज़बान से।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) यही है जमा करना और गिन-गिन कर रखना, यानी सैंत-सैंत कर रखना और अल्लाह की राह में ख़र्च न करना, नहीं तो धन रखना निषेध (हराम) नहीं यह उसी समय मना है जब ज़कात सदके (दान) और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का इन्तेज़ाम न हो।

६. वह अल्लाह (तआला) की सुलगायी हुई आग होगी।

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ⑥

७. जो दिलों पर चढ़ती चली जायेगी।

الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ⑦

८. हर तरफ़ से बंद की हुई होगी।

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ⑧

९. उन पर बड़े-बड़े स्तम्भ (सुतूनों) में।

فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ⑨

सूरतुल फ़ील-१०५

سُوْرَةُ الْفِيْلِ

सूरतुल फ़ील मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया।[1]

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ①

२. क्या उस ने उनकी चाल को बेकार नही कर दिया?

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ②

३. और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिये।[2]

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ③

४. जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे।[3]

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ④

५. तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ⑤

---

[1] **सूरतुल फ़ील :** इस में हाथी वालों का बयान है जो यमन से ख़ाना कआबा को ढाने आये थे اَلَم تَرَ का मतलब है اَلَم تَعلَم क्या तुझे ज्ञान (इल्म) नहीं? यह सवाल सकारात्मक (मुसबत) है, यानी तू जानता है या वह सब लोग जानते हैं जो तेरे ज़माने में है, यह इसलिये फ़रमाया कि अरब में यह घटना घटे अभी ज़्यादा समय गुज़रा नहीं था। मशहूर क़ौल के मुताबिक़ यह घटना (वाक़ेआ) उस समय घटी जिस साल नबी (ﷺ) का जन्म हुआ था इसलिये अरब में उस की ख़बरें प्रसिद्ध (मशहूर) और लगातार थीं।

[2] اَبابِيل यह किसी पक्षी का नाम नहीं इसका मतलब है झुन्ड।

[3] سِجِّيل मिट्टी को आग में पकाकर बनाये हुए कंकड़। इन छोटे-छोटे कंकड़ों ने तोप के गोलों और बंदूक की गोलियों से ज़्यादा विनाश (हलाकत) का काम किया।

सूरतु क़ुरैश-१०६

سُورَةُ قُرَيْشٍ

सूरतु क़ुरैश मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़ुरैश* को प्रेम दिलाने के लिए।

لِإِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ﴿1﴾

२. (यानी) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा (सफ़र) का आदी बनाने के लिए।

اِلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ﴿2﴾

३. तो (उस शुक्रिये में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहें।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ﴿3﴾

४. जिस ने उन्हें भूख में खाना दिया और डर (और भय) में अमन अता किया।[1]

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿4﴾

सूरतुल माऊन-१०७

سُورَةُ الْمَاعُوْنِ

सूरतुल माऊन* मक्का में नाज़िल हुई इस में सात आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ﴿1﴾

२. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्के देता है।[2]

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ﴿2﴾

---

* **सूरतु क़ुरैश** : इसे सूरतुल ईलाफ भी कहते हैं, इस का तआल्लुक भी पहले की सूरत से है।

[1] अरब में क़त्ल (हत्या) और लूटपाट सामान्य (आम) थी लेकिन मक्का के क़ुरैश को हरम की वजह से जो आदर-मान हासिल था उस की वजह से वे भय और डर से महफ़ूज़ थे।

* **सूरतुल माऊन**: इस सूरत को सूरतुद्दीन, सूरत अरऐत, और सूरतुल यतीम भी कहते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] इसलिये कि एक तो कंजूस है, दूसरे क़यामत का इंकारी है, भला ऐसा इंसान यतीम के साथ क्योंकर अच्छा सुलूक कर सकता है? जिस के दिल में धन की जगह मानवीय मूल्यों और अख़लाक़ी उसूलों का महत्व (अहमियत) और प्रेम होगा वही यतीम के साथ अच्छा सुलूक करेगा, दूसरे यह कि उसे इस बात का यक़ीन हो कि उस के बदले मुझे क़यामत के दिन अच्छा बदला मिलेगा।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ③

३. और गरीब (भूखे) को खाना खिलाने की प्रेरणा (तरगीब) नहीं देता।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ④

४. उन नमाज़ियों के लिए 'वैल' (नरक की एक जगह) है।

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ⑤

५. जो अपनी नमाज से अचेत (गाफ़िल) हैं।[1]

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ⑥

६. जो दिखावे का काम करते हैं।

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ⑦

७. और प्रयोग (इस्तेमाल) में आने वाली चीजें रोकते हैं।[2]

सूरतुल कौसर-१०८

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ

सूरतुल कौसर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ①

१. बेशक हम ने तुझे कौसर (और बहुत कुछ) दिया है।

---

[1] इस से वह लोग तात्पर्य (मुराद) हैं जो नमाज़ या तो पढ़ते ही नहीं या पहले पढ़ते रहे फिर आलसी (सुस्त) हो गये, या नमाज़ उस के नियमित (मुक़र्रर) समय से नहीं पढ़ते या देर से पढ़ने की आदत बना लेते हैं या ख़ुशूअ और ध्यान से नहीं पढ़ते। यह सभी मतलब इस में आ जाते हैं, इसलिए नमाज़ में सभी गफ़लतों से बचना चाहिये। यहाँ इस जगह पर चर्चा करने से यह भी स्पष्ट (वाज़ेह) है कि नमाज़ यह सुस्ती उन्हीं से होती है जो परलोक (आख़िरत) के प्रतिकार (बदले) और हिसाब, किताब पर यक़ीन नहीं रखते।

[2] مَعْنٌ थोड़ी चीज को कहते हैं। कुछ इसका मतलब ज़कात (देयदान) लेते हैं, क्योंकि वह भी असल माल के मुक़ाबले बहुत कम होती है। (ढाई प्रतिशत) कुछ ने इससे घरों में इस्तेमाल की चीजें ली हैं जो पड़ोसी एक-दूसरे से मँगनी में माँग लिया करते हैं। मतलब हुआ घरेलू प्रयोग की चीजें मंगनी में दे देना, इस में तंगी न ज़ाहिर करना अच्छे गुण (सिफ़त) हैं और इस के ख़िलाफ़ बख़ीली और कंजूसी बरतना यह क़यामत के मुंकिरों का आचरण (अख़लाक़) है।

* **सूरतुल कौसर** : इसका दूसरा नाम सूरतुन नहर भी है।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿2﴾

२. तो तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और क़ुर्बानी कर।[1]

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿3﴾

३. बेशक तेरा दुश्मन ही लावारिस और बेनाम व निशान है।

سُورَةُ الْكَافِرُونَ

सूरतुल काफ़िरून-१०९

सूरतुल काफ़िरून* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छः आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿1﴾

१. आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो!

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿2﴾

२. न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो।

وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿3﴾

३. और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ﴿4﴾

४. और न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिस की तुम ने इबादत की।

وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿5﴾

५. न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ।

---

[1] यानी नमाज़ भी केवल अल्लाह के लिये और क़ुर्बानी भी केवल एक अल्लाह के नाम पर। मुशरिकों की तरह इस में दूसरों को शामिल न कर। نَحْر का असल मायेना है ऊँट के गले में नीज़ा या छुरी मार कर वध (ज़िब्ह) करना। दूसरे जानवरों को ज़मीन पर लिटाकर उन के गलों पर छुरी फेरी जाती है उसे ज़िब्ह करना कहते हैं लेकिन यहाँ नहर से मुराद आम क़ुर्बानी है, इस के सिवा इस में दान-पुण्य (सदक़ा-ख़ैरात) के रूप में वलि (क़ुर्बानी) देना, हज के मौक़ा पर मिना में ईदुल अज़हा के दिन क़ुर्बानी करना सब शामिल है।

*सूरतुल काफ़िरून: सही हदीसों से साबित है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तवाफ़ की दो रकअतों, और फ़ज्र और मग़रिब की सुन्नतों में (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ) और सूरतुल इख़्लास पढ़ते थे। इसी तरह आप ने कुछ सहाबा से फ़रमाया कि रात को सोते समय यह सूरत पढ़कर सोओगे तो शिर्क से बरी माने जाओगे। (मुसनद अहमद ५\४५६, तिर्मिज़ी ३४०३, अबूदाऊद न॰ ५०५५)

६. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म (दीन) है और मेरे लिये मेरा धर्म है।

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿6﴾

सूरतुन नस्र-११०

سُورَةُ النَّصْرِ

सूरतुन नस्र* मदीने में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. जब अल्लाह की मदद और विजय (फ़त्ह) हासिल हो जाये।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ﴿1﴾

२. और तू लोगों को अल्लाह के धर्म की तरफ़ झुंड के झुंड आता देख ले।[1]

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللّٰهِ أَفْوَاجًا ﴿2﴾

३. तो तू अपने रब की महिमा (तस्बीह) और तारीफ़ करने में लग, और उस से माफ़ी की दुआ कर, बेशक वह माफ़ करने वाला है।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿3﴾

सूरतुल लहब -१११

سُورَةُ اللَّهَبِ

सूरतु लहब* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

---

* सूरतुन नस्र : अवतरण (नुज़ूल) के हिसाब से यह आख़िरी सूरत है (सहीह मुस्लिम, किताबुत तफ़सीर) यह सूरत उतरी तो कुछ सहाबा समझ गये कि अब नबी (ﷺ) का अन्तिम समय आ गया है, इसलिये आप को तस्बीह और क्षमायाचना (तौबा) का हुक्म दिया गया है, जैसे हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत उमर का कलाम सहीह बुख़ारी में है। (तफ़सीर सुरतुन नस्र)

[1] अल्लाह की मदद से अभिप्राय (मुराद) है इस्लाम और मुसलमानों का कुफ़्र और काफ़िरों पर ग़ल्बा, और فتح फ़त्ह से मुराद मक्का की फ़त्ह है, मक्का फ़त्ह से लोगों पर यह बात खुल गई कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर (संदेष्टा) है और इस्लाम धर्म (दीन) सच्चा धर्म है जिस के बिना आख़िरत की नजात मुमकिन नहीं, अल्लाह ने फ़रमाया कि जब ऐसा हो तो।

* सूरतुल लहब : इसे सूरतु तब्बत भी कहते हैं इस के अवतरण (नुज़ूल) के बारे में आता है कि जब नबी (ﷺ) को हुक्म हुआ कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरायें और उपदेश दें, तो आप ने सफ़ा पर्वत पर चढ़कर يَا صَبَاحَاه की आवाज़ लगाई, ऐसी आवाज़ ख़तरे की निशानी मानी जाती थी।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ①

१. अबू लहब के दोनों हाथ टूटे गये और वह (खुद) नाश हो गया।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ②

२. न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमायी।

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ③

३. वह मुस्तक़बिल क़रीब में भड़कने वाली आग में जायेगा।

وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ④

४. और उसकी पत्नी भी (जायेगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।

فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ⑤

५. उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी।[1]

आप (ﷺ) की पुकार पर लोग जमा हो गये। आप ने फ़रमाया : तनिक बताओ, अगर मैं तुम को ख़बर दूं कि इस पहाड़ के पीछे एक घुड़सवार सेना है जो तुम पर हमला करना चाहती है, तो तुम मेरी बात मानोगे? उन्होंने कहा क्यों नहीं। हम ने आप को कभी झूठा नहीं पाया। आप ने फ़रमाया : फिर मैं तुम्हें एक बड़े प्रकोप (अज़ाब) से डराने आया हूँ। (अगर तुम कुफ़्र और शिर्क पर डटे रहे) यह सुनकर अबूलहब ने कहा تَبًّا لَكَ तेरा नाश हो, क्या तूने हमें इस के लिये जमा किया था जिस पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी। (सहीह अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतु तब्बत) अबूलहब का वास्तविक नाम अब्दुल उज़्ज़ा था, उसकी ख़ूबसूरती, शोभा (ज़ीनत) और चेहरे की लाली की वजह से उसे अबू लहब कहा जाता था, इस के सिवा अपने अन्त के आधार पर भी उसे नरक का ईंधन बनना था। यह नबी (ﷺ) का सगा चचा था किन्तु आप का कट्टर दुश्मन और उसकी पत्नी उम्मे जमील बिन्ते हर्ब भी दुश्मनी में अपने पति से कम न थी।

[1] جِيْد गर्दन مَسَد मजबूत बटी हुई रस्सी, वह मूँज की या खजूर की छाल की, या लोहे के तारों की। जैसाकि कई लोगों ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) किया है। कुछ ने कहा कि यह दुनियाँ में डाले रखती थी, जिसका बयान किया गया, लेकिन ज्यादा सहीह बात यह लगती है कि नरक में उस के गले में जो तौक़ होगा वह लोहे के तारों से बटा होगा। مَسَد से उपमा उसकी कड़ाई और मजबूती को स्पष्ट (साफ़) करने के लिये दी गई है।

सूरतुल इख़्लास-११२

سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ

सूरतुल इख़्लास* मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ①

१. (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ②

२. अल्लाह (तआला) बेनियाज़ है।[1]

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ③

३. न उस से कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया।[2]

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ④

४. और न कोई उसका समकक्ष (हमसर) है।[3]

---

* **सूरतुल इख़्लास** : यह संक्षिप्त (मुख़्तसर) सूरत बड़ी प्रधानता (फ़ज़ीलत) रखती है। इसे नबी (ﷺ) ने एक तिहाई क़ुरआन कहा है और इसे रात को पढ़ने का प्रलोभन (तरग़ीब) दिया है। (सहीह अलबुख़ारी) कुछ सहाबा दूसरी सूरतों के साथ हर रकअत में इसे मिलाकर ज़रूर पढ़ते थे, जिस पर नबी (ﷺ) ने उनसे फ़रमाया: तुम्हारा इस से प्रेम तुम्हें स्वर्ग मे ले जायेगा। (बुख़ारी, किताबुत तौहीद, किताबुल अज़ान, बाबुल जमओ बैनस सूरतैने फ़िर रकअ: मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन) इस के उतरने की वजह यह बताई गई है कि मुशरिकीन ने आप से कहा कि अपने रब का नसब बताओ। (मुसनद अहमद, ५।१३३,१३४)

[1] यानी सब उस के सामने मुहताज हैं और वह सब से निस्पृह (बेनियाज़) और निरपेक्ष है।

[2] यानी न उस से कोई चीज़ निकली है न वह किसी चीज़ से निकला है।

[3] न उस की ज़ात में न उसकी विशेषताओं में न उस के कर्मों (अमल) में (لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ) (अश शूरा-११) हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह (तआला) फ़रमाता है कि इंसान मुझ को गाली देता है यानी मेरे लिये संतान सिद्ध (साबित) करता है। जबकि मैं अकेला हूँ, निस्पृह (बेनियाज़) हूँ, मैंने न किसी को जन्म दिया है, न मैं किसी से पैदा हुआ, न कोई मेरे बराबर है। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर कुल हुवल्लाहु अहद) इस सूरत में उनका भी खण्डन (तरदीद) हो गया जो अनेक ईश्वर मानते हैं और उनकी भी जो अल्लाह की औलाद मानते हैं और उनकी भी जो दूसरों को उसका साझी कहते हैं और उनकी भी जो अनिश्वरवादी (नास्तिक) हैं।

सूरतुल फलक-११३

سُوْرَةُ الْفَلَقِ

सूरतुल फलक* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पांच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. आप कह दीजिये कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूं।[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿1﴾

२. हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿2﴾

३. और अंधेरी रात की बुराई से, जब उसका अंधेरा फैल जाये।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ﴿3﴾

४. और गांठ (लगाकर उन) में फूंकने वालियों की बुराई से (भी)

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ﴿4﴾

५. और द्वेष (हसद) करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।[2]

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿5﴾

---

* **सूरतुल फलक** : इस के बाद सूरतुन नास है। इन दोनों की शामिल फज़ीलत कई हदीसों में आई है। मिसाल के तौर पर एक हदीस में नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: आज रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैंने कभी नहीं देखी। यह फ़रमा कर आप ने यह दोनों सूरतें पढ़ीं। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन) आप (ﷺ) का यह भी नियम था कि रात को सोते समय सूरतुल इख़लास और मुअव्वज़तैन पढ़कर अपने दोनों हथेलियों पर फूंकते फिर उन्हें पूरे शरीर पर मलते, पहले सिर, चेहरे और शरीर के अगले हिस्से पर हाथ फेरते, इस के बाद जहां तक आप के हाथ पहुंचते तीन बार आप ऐसा करते। (सहीह अलबुख़ारी, किताबु फ़ज़ायेलिल क़ुरआन, बाबु फ़ज़लिल मुअव्वज़ात)

[1] فَلَق का सहीह मायना भोर है, सुबह को इसलिये ख़ास किया कि जैसे अल्लाह (तआला) रात का अंधेरा ख़त्म करके दिन की रोशनी ला सकता है वह इसी तरह भय और डर को दूर करके पनाह मांगने वालों को शान्ति भी प्रदान (अता) कर सकता है, या इंसान रात को जिस तरह इस बात के इंतेज़ार में रहता है कि सवेरे उजाला हो जायेगा, इसी तरह डरा हुआ इंसान पनाह के ज़रिये कामयाबी के सूरज के निकलने की उम्मीद रखता है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] ईर्ष्या (हसद) यह है कि हसद करने वाला दूसरे की अच्छी चीज़ों की ख़त्म करने की कामना (तमन्ना) करता है, इसलिए उस से भी पनाह मांगी गई है, क्योंकि हसद भी एक बड़ा अख़लाक़ी रोग है जो नेकी को खा जाता है।

सूरतुन नास-११४

सूरतुन नास* मक्का में नाजिल हुई और इस में छ: आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की पनाह में आता हूं।[1]

२. लोगों के मालिक की। (और)

३. लोगों के पूजने लायक़ की (पनाह में)।[2]

४. शंका (शक) डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से।

५. जो लोगों के सीनों में शंका (वसवसा) डालता है।

६. (चाहे) वह जिन्न में से हो या इंसान में से।[3]

سُورَةُ النَّاسِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿1﴾

مَلِكِ النَّاسِ ﴿2﴾

اِلٰهِ النَّاسِ ﴿3﴾

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ﴿4﴾

الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿5﴾

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿6﴾

* **सूरतुन नास :** इसकी फ़ज़ीलत पहले की सूरत के साथ बयान की जा चुकी है। एक दूसरी हदीस में है कि नबी (ﷺ) को नमाज में बिच्छू ने डस लिया नमाज के बाद आप ने पानी और नमक मंगवाकर उसके ऊपर मला और साथ-साथ (قل يأيها الكافرون)(قل أعوذ برب الفلق)(قل أعوذ برب الناس) पढ़ते रहे। (मज्मउज़ ज़वायेद ५\१११ और हैसमी ने कहा कि इसकी सनद हसन है)

[1] رَبّ (रब) का मतलब है जो (शुरू) ही से जब इंसान अभी मां के गर्भाशय ही में होता है उस की तदबीर और सुधार करता है यहां तक कि वह बालिग हो जाता है फिर वह यह तरीक़ा केवल कुछ ख़ास लोगों के लिये नहीं बल्कि सभी मानव जाति के लिये करता है और सभी मानव जाति के लिये ही नहीं अपनी पूरी मख़लूक़ के लिये करता है, यहां केवल इंसानों की चर्चा उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) और प्रधानता (अज़मत) दिखाने के लिये है जो उन्हें पूरी मख़लूक़ पर हासिल है।

[2] जो सारी दुनिया का पालनहार हो, पूरी सृष्टि (मख़लूक़) उसी के ताबे है। वही सत्ता इस बात के लायक़ है कि उसकी उपासना (इबादत) की जाये और वही सब लोगों का पूज्य (माबूद) हो, इसलिए उसी महान और बुलन्द ज़ात की पनाह प्राप्त (हासिल) करता हूं।

[3] यह वस्वसा (गुप्त ध्वनि) डालने वाले दो तरह के हैं जिन्नातों के शैतान और मानव जाति के। पहले शैतान को अल्लाह तआला ने इंसान को गुमराह करने की ताक़त दी है, उस के सिवाय हर इंसान के साथ उसका एक शैतान साथी होता है जो उसको गुमराह करता रहता है। हदीस में है कि जब नबी (ﷺ) ने यह बात बताई तो सहाबा ने सवाल किया, हे अल्लाह के नबी क्या वह आप के साथ भी है, आप ने कहा, हां। लेकिन अल्लाह ने मेरी मदद की है और वह मेरा आज्ञाकारी (फ़रमांबर्दार) है, मुझे भलाई के सिवाय किसी चीज़ को नहीं कहता। (सहीह मुस्लिम, किताबु सिफ़ातिल क़ियाम:)